ज्ञानामृत

सितम्बर-अक्तूबर, 1980 II
वर्ष 16 ❋ अंक 4-5
मूल्य 1.75

रावण के दस शीश ५ विकार नर के और ५ विकार नारी के प्रतीक हैं।

अमृत-सूची

१. ईश्वरीय संदेश देने का सौभाग्य और स्वर्णिम अवसर (सम्पादकीय) १
२. सहज राजयोग कठिन क्यों ? ३
३. अनोखा उपवन ७
४. 'कार' को बुखार था ८
५. राखी बन्धन समाचार (चित्रों में) ९
६. नवरात्रि का त्योहार और अर्थ-बोध १३
७. अगर निरन्तर योगी बनना चाहते हो तो १५
८. गीत १६
९. विजय दशमी अथवा दशहरा १७
१०. सेवा समाचार (चित्रों में) १९
११. वह क्या है ? (पहेली) २३
१२. आध्यात्मिक सेवा समाचार २४
१३. माया मेरा क्या कर लेगी ? ४०

ब्र० कु० सरला जी गुजरात के मुख्यमंत्री भ्राता सोलंकी जी को राखी बाँध रही हैं।

जी० एन समादूत, जज हाईकोर्ट, कर्नाटक राज्य को ब्र० कु० सरला, राखी बाँध रही हैं। साथ ब्र० कु० राधा तथा सरोज बैठी हैं।

ब्र० कु० निर्मल शान्ता जी के विदेश यात्रा से लौटने के पश्चात् मधुबन पधारने पर दादी प्रकाशमणि जी तथा अन्य मधुबन निवासी उनका हार्दिक स्वागत कर रहे हैं।

डा० लीले जसलोक हास्पीटल के मुख्य डाक्टर अपने→ परिवार सहित मधुबन माऊँट आबु में राजयोग शिवर में पधारे। नीचे चित्र में वे मधुबन के राजयोग शिक्षकों के साथ खड़े हैं।

ईश्वरीय संदेश देने का सौभाग्य और स्वर्णिम अवसर

संसार में परम्परा से ऐसा होता चला आया है कि जब कोई पिता अपने यहाँ कोई यज्ञ रचता है तो वह सभी बच्चों को सस्नेह निमन्त्रण देता है कि वे भी यज्ञ में सम्मिलित हों और यज्ञ-प्रसाद स्वीकार करें। ऐसी ही मर्यादा विशेष उत्सवों पर भी अपने मित्रों, सम्बन्धियों तथा परिचित व्यक्तियों को बुलाने की चली आई है। लोकाचार में भी उस व्यक्ति को मिलनसार, स्नेही और विशाल चित्त नहीं माना जाता जो किसी उत्सव के अवसर पर दूसरों को आमन्त्रित नहीं करता। बल्कि सत्यता तो यह है कि जिन व्यक्तियों का मन-मुटाव हो अथवा जो उत्सव के स्थान से भिन्न दूसरे नगरों में भी रहते हों, उन्हें भी बड़े चाव, सम्मान और बड़ी सहृदयता से आमन्त्रित किया जाता है कि वे भी उस मौके पर अवश्य आयें और सबकी खुशी बढ़ायें। बात यहाँ तक होती है कि यदि कोई अपने आने के संकल्प में ढीला-पन व्यक्त करता है तो जिनके घर में उत्सव हो वे उस व्यक्ति को अनुनय-विनय, अनुरोध-आग्रह और हुज्जत से यह भी कह देते हैं कि आप नहीं आयेंगे, तो हम यह कार्य भी नहीं करेंगे। सभी इस बात के अनु-भवी हैं कि यज्ञ अथवा उत्सव में जितने अधिक लोग सम्मिलित होते हैं, सभी का उत्साह ज्यादा बढ़ जाता है और सभी की खुशी उतने गुणा अधिक हो जाती है।

संसार की ये सब मर्यादायें संगम युग में स्वयं परमात्मा द्वारा यज्ञ अथवा उत्सव रचे जाने से ही सम्बन्धित हैं और वहाँ से ही शुरू हुई हैं। साधा-रणतया जो यज्ञ अथवा उत्सव होते हैं, उनमें यदि कोई किसी कारणवश न भी पधार सके तो उसकी धार्मिक क्षति अथवा आध्यात्मिक हानि अमिट नहीं होती। उसकी पूर्ति किसी-न-किसी साधन से की ही जा सकती है। परन्तु स्वयं परमात्मा अथवा रुद्र भगवान जो रुद्र यज्ञ, अश्वमेध अविनाशी ज्ञान-यज्ञ, ज्ञान-योग महायज्ञ अर्थात विश्व के कल्याण के लिए जो यज्ञ रचते हैं, वह अपनी प्रकार का अद्वितीय, अनुपम और अविनाशी लाभ देने वाला यज्ञ है। उसमें जो अपने पुराने संस्कारों को या काम, क्रोध, लोभादि विकारों की आहुति नहीं डालता, उसके वे संस्कार और विकार अथवा दुःख के बीज उसी के पास रह जाते हैं। अतः यह हरेक के कल्याण के लिए आवश्यक है कि वह इस यज्ञ की ज्ञान और योग रूपी अग्नि में अपने विकारों की आहुति डाले। इसके लिए ज़रूरी है कि जो जिसका मित्र है वह उसे इस यज्ञ में आमन्त्रित करे। यही सच्ची मैत्री-कृपा है। ज्ञानवान व्यक्ति का मित्र-भाव तो समस्त मानव-समाज के प्रति होता है। अतः उसे तो दिल खोलकर जन-जन को इस महायज्ञ में सम्मिलित होने के लिए आमन्त्रण देना चाहिए।

जब कुम्भ के मेले की सूचना लोगों को मालूम होती है तो वे जैसे-कैसे अपने कार्य की व्यवस्था करके स्वजनों के साथ मेला-स्थान पर पहुँच जाते हैं। वहाँ रहने का स्थान न मिले तो भी यह सोचकर कि उन्हें पुण्य-लाभ होगा वे वहाँ नदी के किनारे रेत के ढेर पर भी सो जाते हैं। वहाँ तक पहुँचने के लिए टीके लगवाते हैं। गाड़ी की भीड़-भाड़ और धक्का-पेल को बर्दाश्त करके और यात्रा-स्थान पर खाने-पीने की असुविधा की परवाह न करके भी वे साधु-संगति के लक्ष्य से अथवा महात्माओं के दर्शन करने के विचार से पहुंच जाते हैं। उन सब को इसका क्या लाभ होता है, वह तो आज किसी से छिपा नहीं है। तथापि हर वर्ष सभी प्रकार की असुविधाओं को भूल कर एक अल्प-स्थायी और नगण्य प्राप्ति के लिए वे लोग दूर-दूर से केवल सूचना मात्र से पहुँच जाते हैं। केवल कुम्भ के अवसर पर ही नहीं, किसी विशाल यज्ञ की यज्ञ-स्थली पर अथवा वैष्णो देवी आदि जैसे किसी तीर्थ स्थान पर भी वे पहुँच जाते हैं। फिर जितने दिन वे वहाँ रहते हैं, कम-से-कम उतने दिन तो यम-नियमों का, आहार-व्यवहार और विचार की शुद्धि का पालन करते ही हैं और अपने भावों व भावनाओं का स्तर ऊँचा बनाये रखने का यत्न करते हैं। इसी प्रकार,

यदि देहली में होने वाले महायज्ञ की सूचना धर्म-प्रेमी, प्रभु-प्रेमी अथवा योग-प्रेमी लोगों को दी जाए तो कोई कारण नहीं कि उनमें से लाखों नहीं तो हज़ारों और वह भी न सही तो सैंकड़ों लोग इस महायज्ञ में सम्मिलित होने के लिए, इस सच्ची यात्रा को करने के लिए अथवा इस सच्चे कुम्भ में आत्म-दर्शन के लिए न पधारें। फिर भी यदि इने-गिने-चुने ही व्यक्ति पधारते हैं तो शेष हज़ारों, लाखों, करोड़ों लोगों को सूचना न देने अथवा आमन्त्रित न करने का दोष तो हम पर नहीं आयेगा।

अतः जीवन में कुछ कर गुज़रने के अथवा अपनी कला, अपने कौशल और अपने तन-मन-धन से आत्माओं की सेवा के जो सुअवसर मिलते हैं, उन्हें अपने हाथ से छूटने देना तो गोया अपने ही प्रति मित्र-भाव की कमी का प्रतीक है। किसी ने कहा है कि सुअवसर रोज़ नहीं आया करते (Opportunities never come often) और फिर जिन्हें 'स्वर्णिम अवसर' कहा जाता है, वे तो किसी विरले ही सौभाग्यशाली के जीवन में एक-आध बार ही आ जाया करते हैं जो उसके भाग्य के सितारे को चमका जाया करते हैं। इस पर भी स्वयं परमात्मा की ओर से सभी आत्मा रूपी भाइयों को निमंत्रण देने का श्रेय तो किसी विरले ही को नसीब होता है और होता भी कल्प में केवल एक ही बार है। अतः जो बोलना जानता है वह बोलकर, जो लिखना जानता है वह पत्र लिखकर, जो चलना जानता है वह दूसरों के पास जाकर और जिसके पास रोटी खाने के लिए पैसे हैं वह चन्द पैसे खर्च करके दूसरों के पास छपा हुआ पैग़ाम देकर, जिसमें व्यवस्था करने और उद्यम करने की कला एवं शक्ति है वह एक या दो बसों एवं रेल के डिब्बों में जितने यात्री हों को संगठित करके उन्हें महोत्सव के लिये देहली ले आये।

अगर कोई अब भी लालकिले पर ईश्वरीय झंडा लहराये जाने के विश्व-इतिहास के अनुपम अवसर पर, विश्व-विख्यात यज्ञ के दिनों में, सच्चे तीर्थ और सत्संग लाभ के लिए लोगों को नहीं लाता तो फिर वह अगले कल्प में, और उससे भी अगले कल्प में, या इस अवसर के बाद किसी भी कल्प में, इस श्रेष्ठतम कार्य की पात्रता रूपी वरदान से वंचित ही रह जायेगा।

स्वतन्त्रता दिवस पर ध्वजारोहण को देखने के लिए देश के दूर-स्थित स्थानों से भी लोग देहली में पहुँचते हैं। लाल किले के ऐतिहासिक स्मारक को निहारने के लिए देश-देशान्तर से प्रतिदिन यात्री-बसें भरी हुई वहाँ पहुँचती हैं। भारत की राजधानी देहली को देखने के लिए देहली से बाहर के स्थानों के लोगों में एक संकल्प बना रहता है। परन्तु यह महा-यज्ञ, यह अनोखा ध्वजारोहण, यह अद्भुत योग-समागम, यह अमूल्य सत्संग-लाभ तो ८४ जन्मों में एक ही बार ऐसे स्थान पर देखने, सुनने, मनाने और पाने के लिए मिलता है! यात्रा-स्थानों पर ऊँची-ऊँची पहाड़ियों पर लोग नटवरलाल बनकर, रेंग-रेंग कर, घिसट-घिसट कर, कलाबाज़ी खाते हुए अथवा दम फुलाते हुए भी पहुँच ही जाते हैं। अतः कोई कारण नहीं कि यदि लोगों को इस अवसर की विशेषता का सही ज्ञान हो तो वे बड़े चाव से यहाँ न आयें; वे अवश्य आयेंगे।

स्वतन्त्रता के संग्राम में जब 'दिल्ली चलो' का नारा मिला था तो सबकी ज़बान पर यही नारा था। आज जब हर मानवीय आत्मा को, भूमण्डल के हर प्राणी को विकारों से स्वतन्त्रता दिलाने के महा संग्राम की शहनाई बजने जा रही है और "विकारो, विश्व से निकल जाओ !" इस महा संग्राम का एक विशाल आयोजन होने जा रहा है और माया का तख्ता उलट कर जन-मन में पवित्रता तथा सदाचार का नया दौर शुरू होने जा रहा है तो हर ईश्वरीय संदेश-वाहक की जिह्वा पर यही नारा होना चाहिए कि "दिल्ली (महायज्ञ) में चलो !" और सैंकड़ों, हज़ारों, लाखों लोगों का समूह बनाकर दिल्ली में सत्य धर्म का झंडा गाड़ दो !"

हमारा नारा

नई क्रान्ति, विश्व में शान्ति !
मिटाओ भ्रान्ति, ओम शान्ति !!

—जगदीश

"सहज राज योग—कठिन क्यों ?"

योगीराज, मधुबन, माउण्ट आब

ईश्वरीय जीवन को आनन्द विभोर करने वाला प्रभु-मिलन, योग में निहित है। योग नहीं तो ईश्वरीय जीवन का रस भी नहीं। योग ही वो श्रेष्ठ-तम् कला है जो मनुष्य को सन्तुष्ट और पवित्र रहना सिखाती है। योग का अभाव हर कदम पर अभाव पैदा करता है। योग आत्मा को सम्पन्न बनाकर सभी ईश्वरीय सम्बन्धों का रसास्वादन कराता है। योग को जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि कहना ही यथार्थ है।

आज तक भी शास्त्र वर्णित कठिन योगों का अभ्यास करके महान् आत्माएँ संसार को कुछ सिखाती आई हैं। परन्तु अब अन्त काल में योगेश्वर ने स्वयं सत्य योग की सरल विधि का ज्ञान दिया। जिसके अभ्यास से ऐसी अग्नि प्रज्वलित होती है जो जन्म-जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं, संस्कार बदल जाते हैं, मद दूर हो जाता है और आत्मा सहज ही प्रभु-मिलन जैसी ऊँच सीढ़ी को चढ़ पाती है।

स्वयं ज्ञान सागर द्वारा योग सिखाने के बाद भी इस योग में एकाग्रता बहुत ही कम आत्माओं को प्राप्त होती है। योग अभी भी उन्हें कठिन भासता है। प्रस्तुत लेख में सहज योग की कठिनता के कारण और सरलता के साधनों पर प्रकाश डाला जायेगा।

१. पवित्रता

देवताओं के ललाट पर सुशोभित पवित्रता, योगियों के जीवन का आधार है। जो पवित्र नहीं वो योगी भी नहीं। जितनी पवित्रता की सूक्ष्म धारणा हम जीवन में करते जाते हैं, उतनी ही योग की सर-लता अनुभव होती जाती है।

यह प्रश्न किया जाता है कि परमात्मा की याद के लिए ब्रह्मचर्य की क्या आवश्यकता? परन्तु परमा-त्मा की याद का अर्थ उसके नाम स्मरण वा मन्त्रजाप से नहीं, बल्कि उससे सम्बन्ध जोड़ने से है। इस राज योग में हमें बुद्धि रूपी विमान पर बैठकर उस परम पिता के पास परमधाम में पहुँचना होता है। इस-लिए बुद्धि का दिव्य और शक्तिशाली होना परमा-वश्यक है। और ब्रह्मचर्य ही इन दोनों उद्देश्यों का मात्र साधन है। विकारी मनुष्य की कमज़ोर व अशुद्ध बुद्धि में दिव्य चक्षु विधाता की याद स्थिर नहीं हो सकती। सर्वशक्तिवान से बुद्धि योग जोड़ने के लिए बुद्धि के शक्तिशाली होने की आवश्यकता है। जिसके अन्दर कामाग्नि जलती हो, उसके अन्दर योगाग्नि नहीं जल सकती।

यह अनुभव किया गया कि अगर पवित्रता में थोड़ी भी कमी है तो बुद्धि एकाग्र नहीं होती। एक भी अशुद्ध संकल्प बुद्धि को बार-बार अशुद्ध दुनिया में खींच लायेगा। इसके स्पष्टीकरण के लिए प्रकम्पन गति (Theory of Vibrations) को जानना आवश्यक है।

हमारे संकल्प प्रकम्पनों के रूप में चारों ओर फैलते हैं और मुख्य बात यह है कि समान प्रकम्पनों में परस्पर आकर्षण होता है। तो मन में अगर पवित्र संकल्प हैं, अर्थात् हमारे चारों ओर पवित्र प्रकम्पन हैं तो सहज ही आत्मा का आकर्षण, परम पुरुष से हो जाता है। अगर मन में अशुद्ध प्रकम्पन हैं तो उसका खिचाव अशुद्ध विश्व की ओर ही होगा। इसलिए अगर किसी स्थान पर व्यर्थ संकल्प चलने लगें तो तुरन्त उस स्थान को परिवर्तित कर देना चाहिए।

तो योग की ऊँची स्थिति के अभिलाषी स्वयं के

अन्दर झाँक कर देखें कि उनमें देह को देखने की पुरानी आदत तो नहीं है। क्योंकि पतित-तत्वों से तो निर्मित देह संकल्पों को आकर्षित करती है और योग कठिन हो जाता है। इसलिए अभ्यास करें— देह रूपी गुफा में बैठी हुई चमकती आत्मा को देखने का, तो योग सरल हो जायेगा।

२. वाचा व संकल्पों को व्यर्थ गंवाना

कई पुरुषार्थी यों ही अपनी अमूल्य निधियों को गँवाता रहता है। आवश्यकता न होते हुए भी वह वाचा द्वारा अपनी शक्तियों को बहाता रहता है। इससे आत्मा शक्ति हीन हो जाती है।

योग-अभ्यासी को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि पवित्र आत्मा के एक-एक संकल्प का महत्व लाखों रुपये से भी अधिक है। इसलिए छोटी-छोटी बातों में या छोटे-छोटे नुकसान हो जाने पर अपने संकल्प के अतुलनीय ख़जाने को नहीं गंवाना चाहिए। तब मन जल्दी ही शान्त स्थिति में पहुँच कर योग का आनन्द लेगा! अन्यथा मनोबल क्षीण होता जाता है, और मन में उड़कर परमपिता के पास जाने की शक्ति नहीं रहती।

यहाँ एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है— आपने देखा होगा कि आपका मन सारा दिन क्या सोचता है? ये दो नयन जिन-जिन वस्तुओं को देखते हैं, मन उन पर ही संकल्प करता रहता है। तो पुरुषार्थ करना चाहिए कि हम देखते हुए भी न देखें। इसका अर्थ ये कदापि नहीं कि हम आँख बन्द कर लें। इसके लिए पुरुषार्थ यही है कि हम सदा अपनी दिव्य चक्षु से परमपिता व आत्माओं को ही देखें। इससे हमारा ध्यान इस विनाशी विश्व की वस्तुओं की ओर नहीं जायेगा और हमें मन की अन्तर्मुखता अनुभव होगी।

तो इस प्रकार अन्तर्मुखता से शृंगारी हुई आत्मा ही योग रूपी आभूषण से सुशोभित होती है। योग के इच्छुक को न व्यर्थ सुनने की आदत हो और न व्यर्थ सुनाने की।

३. स्वभाव की सरलता

योगी क्योंकि ईश्वर का प्रतिबिम्ब होता है, इसलिए उसका स्वभाव अति नम्र, अहंकार से कोसों दूर, अति सरल होना चाहिए।

कई आत्माओं का स्वभाव इस तरह का होता है कि हर कदम पर भिन्न-भिन्न दृश्य देखकर उनके मन में उबाल आता रहता है। जहाँ उसके सोचने से कुछ भी लाभ नहीं होगा, वहाँ भी वह अनेक प्रश्नों की कतार में स्वयं को उलझा देता है। इसलिए योगी का स्वभाव ऐसा हो कि वह हर आत्म के पार्ट को गुह्यता से जानते हुए निर्संकल्प रह सके?

अपना ही कटु स्वभाव योग-मार्ग में अति विघ्न कारी है। स्वभाव का चिड़चिड़ापन या तुरन्त टकराव की स्थिति पैदा करने वाला स्वभाव योग को क्लिष्ट बना देता है। मार्ग में अनेक बाधाएँ तो आती ही हैं, परन्तु सरल स्वभाव वाला तुरन्त ही स्वयं को मोड़कर बाधाओं को पार कर लेता है। सरल स्वभाव से ही हम जिम्मेदारी को भी सरलता से निभा कर बुद्धि को सदा बोझिल होने से बचा सकते हैं। ऐसे सरल स्वभाव वाला योगी हर बड़ी बात को भी छोटी समझ कर हल्का रहता है, कभी भी परेशान नही होता। और कुछ भी हो जाने पर धैर्यता बनाए रखता है।

४. सांसारिक तृष्णाएँ

भगवान जैसी सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति के बाद भी मनुष्य क्या पाना चाहता है क्या ईश्वरीय मिलन से सम्पूर्ण सुख नहीं मिलता! जो पुनः मनुष्य सांसारिक तृष्णाओं के पीछे मृग तृष्णा की न्याई दौड़ता रहता है।

एक है सांसारिक आनन्द और दूसरा है— ईश्वरीय आनन्द। एक समय एक ही आनन्द प्राप्त किया जा सकता है। दोनों नावों पर पैर नहीं रक्खा जा सकता। कोई कहे कि मैं धन के पीछे भी दौड़ता

रहूँ और परम-शान्ति की अनुभूति भी करूँ, यह उसी तरह असम्भव है कि जैसे कोई मीलों दौड़कर कहे कि उसे थकान ही न हो। इसलिए योग की सर्वोच्च स्थिति तक पहुँचने के लिए साँसारिक तृष्णाओं को त्यागना ही होगा।

क्योंकि जैसे काम और क्रोध की अग्नि, योग अग्नि को भस्म कर देती है, वैसे ही तृष्णाओं की अग्नि भी चित्त की शीतलता को भंग कर देती है। और तब चित्त में योग रस प्रवाहित नहीं हो सकता।

इच्छाएँ कभी शान्त नहीं होती। इच्छाएँ ही दुख का कारण हैं। जितनी अधिक इच्छाएँ, उतना ही मन परतन्त्र। जबकि योग के लिए मन का पूर्ण स्वतन्त्र होना आवश्यक है। अपने पास बहुत साधन इकट्ठे करने का शौक योग में बाधक है। इसलिए ईश्वरीय महावाक्य है कि जितना बैगर बनेंगे उतना ही योग आनन्द प्राप्त करेंगे। क्योंकि जितने पदार्थ हमारे पास होंगे, उतना ही उनसे हमारा आकर्षण होगा और उतना ही ईश्वरीय आकर्षण कम हो जायेगा।

इसलिए योगी बनने की इच्छा रखने वालों को इच्छाओं का त्याग कर देना चाहिए और जितना हो सके संयमित, साधन रहित और वैराग्य सम्पन्न जीवन व्यतीत करना चाहिए। जो पदार्थ हमारी ईश्वरीय खुशी में बाधक हैं, उनका सहर्ष त्याग कर देना चाहिए और अपने जीवन को इस प्रकार ढालना चाहिए कि हमारे अन्तिम क्षणों में किसी भी पदार्थ में हमारा आकर्षण न हो।

५. श्रेष्ठ कर्म

जहाँ योग श्रेष्ठ कर्मों की ओर प्रेरित करता है, वहाँ ही निरन्तर योग के अभ्यास के लिए अपने हर कर्म पर पूर्ण ध्यान देना आवश्यक है। स्थूल रूप में तो श्रेष्ठ कर्मों का महत्त्व है ही, परन्तु उसके सूक्ष्म रूप को भी हमें चेक करना चाहिए। जैसे स्थूल में तो अगर हमसे कोई भूल होती है, हम किसी को वाचा या कर्म से दुःख दे देते हैं तो उसका प्रभाव हमारे योग-अभ्यास पर अवश्य आयेगा, वैसे ही मन की अशुभ भावनाएँ भी मन की एकाग्रता में बाधक होंगी। इसलिए 'विकर्म हुआ और योग टूटा' – यह मन्त्र योगी के स्मृति पटल पर छप जाना चाहिए।

६. अमृत वेले का महत्त्व

प्रातः काल हमारे लिए वरदान लेकर आता है। जो पुरुषार्थी उसका सदुपयोग करना जानते हैं वो योग की सरलता की अनुभूतियों को लेकर जीवन पथ को सरल बना पाते हैं।

अमृत वेले केवल जागने से ही कार्य सिद्ध नहीं हो जाता, बल्कि इस बेला में आत्मा को अमृत से भरपूर करना ही योग के अमृत्व का सरल साधन है। चाहे ज्ञान मनन् के द्वारा, चाहे प्रात. क्लास के द्वारा। मुख्यतः इस समय एकाग्रता की शक्ति से स्वयं को एक रस बनाना चाहिए।

कई पुरुषार्थी नियमित रूप से अमृत वेले जागते हुए भी योगानन्द से अतृप्त ही रह जाते हैं। उसके लिए सोते समय शिव बाबा से मन-रस देने वाला वार्तालाप करके आनन्दित स्थिति में सोना चाहिए और उठते ही यह ध्यान दिया जाए कि हमारा मन पूर्व दिन के संकल्पों में न बह जाए। इस लिए उठते ही स्नानादि कृत्यों में ही न लग जाना चाहिए बल्कि स्वमान में स्थित होकर मन को ईश्वरीय नशे से भरपूर कर देना चाहिए।

अमृत वेले उठने से बुद्धि भी स्वच्छ हो जाती है। वास्तव में तो इस समय योगानन्द प्राप्त करने से मनुष्य की सर्व समस्याएँ स्वतः ही हल हो जाती हैं, उसमें आत्म-विश्वास बढ़ता है, स्फुर्ति आती है और खुशी स्थाई हो जाती है। इसलिए अमृत वेले को यथार्थ महत्त्व न देने को बड़ी कमज़ोरी समझ कर इसका उपचार करना चाहिए। अमृत दाता से दो बातें न करने से मन भारी रहता है, खुशी नहीं रहती और फल स्वरूप मन को खुशी देने के लिए अनेक विनाशी बाह्य साधन अपनाने पड़ते हैं, जिन साधनों

से साधना और ही जटिल हो जाती है।

७. स्वमान की कमी

योगी को यह नशा चढ़ जाना चाहिए कि हम योगी हैं, हम योगेश्वर के बच्चे हैं। इस नशे से जीवन में रूहाव समा जाता है और आत्मा लौकिकता के बहाव से मुक्त हो जाती है। यह स्वमान दैहिक सम्बन्धों के आकर्षण को नीरस कर देता है, ममता की रस्सियाँ टूट जाती हैं। इसलिए योगी को चाहिए कि वह स्वयं को इस लौकिकता के जाल में फँसावे नहीं।

स्वमान में रहने से, क्योंकि आत्मा स्वयं को भरपूर महसूस करती है, इसलिए उसकी बुद्धि दूसरों की कमजोरियों की ओर नहीं जाती, वह दूसरों को देखने में ही अपना समय नहीं गंवाता। स्वमान में स्थित आत्मा को दूसरों के कटु वचन या निन्दक बोल से प्रभावित नहीं करते, इसलिए वह सहज योग का रस पान कर सकता है। जीवन जब खुशियों से सम्पन्न रहता है तब ही योग रूपी ज्योति, अखण्ड जलती है। इसलिए योगी को रोज सबेरे स्वयं को स्वमान का तिलक लगाना चाहिए। और सदा याद रखना चाहिए—

"त्रुटि देखी और तपस्या भंग हुई"

८. समर्पणता का अभाव

जब से शिव बाबा ने हमें अपनाया, हमने अपना सब कुछ मन से उसको समर्पित कर दिया। अब ये तन, मन, धन, परिवार, व्यापार, नौकरी सम्पत्ति हमारी नहीं। योग-अभ्यास में यह बात परम सहयोगी है कि हम अपनेपन को सम्पूर्णतया समर्पण कर दें। सब कुछ होते हुए भी स्वयं को ट्रस्टी समझ कर चलें। इससे ममत्व दूर होगा और बुद्धि हल्की रहेगी।

मनुष्य समस्याओं और परिस्थितियों के समाधान की उधेड़ बुन में निशिदिन अपनी सुख-शान्ति को किनारे किए रहता है। वह यह भूल जाता है कि हम जिसके बने हैं, वह बिगड़ी को बनाने वाला है। अगर हम अपनी समस्या भी उसी के सुपुर्द कर दें, तो वास्तव में समस्याएँ रूई की तरह उड़ जायेगी, पहाड़ राई बन जाएगा। मनुष्य अपनी और अपने परिवार की चिन्ता में चिन्तित रहता है, वह यह भूल जाता है कि इन सबकी चिन्ता उसे ही है जिसके ये सब हैं।

इस प्रकार मैं पन का अभाव रखते हुए, एक बल एक होकर चलने वाला पुरुषार्थी, गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए भी योग को जोवन का अभिन्न अंग महसूस करता है।

९. सहयोग

संसार को स्वर्ग बनाने में जितना सहयोग बनता है, उसके मन में स्वर्ग के रचियता की याद उतनी ही स्थिर रहती है। जहाँ मनुष्य का धन या तन कार्यरत होता है, मन का उधर झुकाव स्वाभाविक है। इसलिए योग के इच्छुक को चाहिए कि मैं पन के अभाव के साथ ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बने तो सहज ही ईश्वर के प्रेम का पात्र बन जायेगा।

परन्तु विशेष रूप से, समय पर जो आत्माएँ सेवा में सहयोगी बनती है उन्हें ईश्वर की ओर से सहज योगी भव का वरदान प्राप्त होता है।

१०. संग का प्रभाव

हर पुरुषार्थी को स्वयं को देखना चाहिए कि वह शीघ्र ही दूसरों के प्रभाव में तो नहीं बह जाता। हमें अपने श्रेष्ठ अव्यक्ति बहाव में दूसरों को बहाना है। हम अपने शक्तिशाली मन द्वारा वातावरण को बदलने वाले, वातावरण के संग से प्रभावित नहीं हो सकते। परन्तु जब हमारी स्वयं की रुचि व्यर्थ की ओर होती है तो बरबस हम कुसंग की ओर खिचें चले जाते हैं। हम यह हीन संकल्प करते हैं कि समाज या दोस्तों की बातों में रुचि न लेने से वे हमें मूर्ख समझेंगे। अगर हमने निर्लिप्त होकर व्यवहार चलाना नहीं सीखा तो हम, तत्र, यत्र प्रभावित होकर अपनी ऊँची स्थिति से नीचे आते रहेंगे।

११. दृढ़ता की कमी

यह अटल सत्य है कि अगर किसी राही को अपनी मंजिल पर जाने का दृढ़ संकल्प है, तो उसे कोई बाधा रोक नहीं सकती। अगर यो अपने सामने कुछ दृढ़ लक्ष्य बना ले, तो कोई भी विघ्न उसे निरन्तर योगी बनने में रोक नहीं सकेगा। इसलिए तीव्र पुरुषार्थी को चाहिए कि वह अपना प्रतिदिन का योग का लक्ष्य निर्धारित करे।

१२. एकान्त

योग को सरल करने के लिए प्रति दिन कम से कम १५ मिनिट खुले आकाश और शुद्ध वायु में एकान्त रमण करे। इससे अवश्य ही स्वउन्नति, विश्व सेवा व उमंग देने वाले नये नये विचार आपके मन में प्रवाहित होंगे। एकान्त में अकेले होकर शिव बाबा से रूह-रिहान करने से प्राप्त आनन्द व ईश्वरीय सुख योग को सरल बना देता है।

अन्त में हम यही कहेंगे कि जीवन में सन्तुष्टि के लिए वह कठिन परिश्रम करे। मेहनत से पलायनता योग को कठिन बनाती है। योग द्वारा अखुट खजानों की प्राप्ति के लिए जीवन से सुस्ती व अलबेलेपन का त्याग कोई विशेष महत्त्व का कार्य नहीं। पूरे कल्प में एक ही बार तो शिव बाबा का मिलन हम आत्माओं से होता है, तब भी अगर सदा उसके साथ रहने का अनुभव न किया तो सम्पूर्ण सुखों की अनुभूति कब करेंगे।

अनोखा उपवन

ले० ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश, माऊन्ट आबू

आबू की चोटी पर
पहाड़ों के बीच में है बसा हुआ
एक अनुपम दिव्य और भव्य मधुबन .
मधुबन की गोदी में
परमात्मा शिव ने ब्रह्मा के कर कमलों से
बनाया है सुन्दर सा अनोखा उपवन।
उपवन में है बाबा की झोंपड़ी
जो है तपस्या की कुटिया निराली
जहाँ रहते थे बाबा तपोपन।
जाते ही झोंपड़ी में
दिखाई देता है बैठा हुआ ब्रह्मा बाबा
नयनों से नयन मिलते ही भूल जाते दुःख सारे
झोंपड़ी के साथ में
है एक न्यारा और प्यारा झूला
जिस पर बैठने से ही सारा जग भूल जाता
माया के सारे संग
तोड़कर मन हर आत्मा का
शिव पिता की याद में है खो जाता
ऐसे ही चेतन उपवन
बसाए हैं शिव पिता ने
गली-गली सारे जहान में
पाकर विकारी आत्माएँ
अनमोल अविनाशी ज्ञान रतन
करते अनुभव सुख-शान्ति का अपने जीवन में
जहाँ बन्द कलियाँ
खिल रहीं फूल बनकर सुन्दर
फैलाते हैं दिव्य गुणों की खुशबूएँ चहुँ ओर
इन चेतन उपवनों से
पाकर नया दिव्य और अलौकिक जन्म
बनाओ किस्मत वरना पछताओगे बारम्बार

'कार' को बुखार था

(ले० ब्रह्माकुमार मुन्नीलाल बुन्दू कटरा, आगरा)

विमल बहिन ने कहा,
कैसा हाल है भाई।
कई दिनों से आप;
पड़े नहीं दिखलाई।।
तबियत तो कुछ ठीक है,
या कुछ है कठिनाई।
कारण क्या है भ्राता जी,
पड़े नहीं दिखलाई।।
आज अचानक ही आये हो,
संशय की तो बात नहीं।
शिव बाबा का यह घर है;
बात बतायें सही-सही।।
माया नगरी यह दुनियाँ है,
माया का ही राज है।
विश्व-विनाशिनी माया ने;
बिगाड़ा सारा काज है।।
इससे बचकर रहना भी है,
और ज्ञान में चलना भी है।
रोज सवेरे उठ करके,
याद 'बाप' को करना भी है।
घर परिवार तो ठीक है,
'युगल' आपकी कैसे।
'अशोक' आदि तो ठीक हैं,
'सरस्वती' अब कैसी।।
सुनता रहा बहिन की बातें,
करता रहा विचार।
कितनी इनमें लगन है,
कितना रूहानी प्यार।।
सब की ये कल्याणी है,
इनके कर्तव्य महान।
सदा सुनाती रहती हैं,
परमपिता का ज्ञान।।
ऐसा काल अब आयेगा,
कि मिटे सभी अज्ञान।
इन से ही आलोकित होगा,
एक दिन सकल जहान।।
पुनः पुनः जब बहिन जी,
प्रश्नोत्तर मुझसे माँगा।
सावधान हो करके मैं,
निज उत्तर देना चाहा।।
मैंने कहा - बहिन जी,
'कार' को बुखार था।
आने में असमर्थ था,
इसलिए लाचार था।।
आता तो मैं रोज़ ही,
पर नहीं सा-कार था।
इसलिए न बात होती,
क्योंकि मैं निरा-कार था।।
वैसे चलना-बोलना,
लगता सब बेकार था।
किन्तु मीठी बहिन जी,
योग ही आधार था।।
पर बताऊँ बहिन जी,
कष्ट अच्छी चीज़ है।
क्योंकि आने से इसे
बाबा से बढ़ती प्रीति है।।
चारपाई पर 'कार' रख
मैं बना निराकार था।
सचमुच ऐसा लग रहा,
शिव बाबा से अतिसम प्यार था।।
घर परिवार सभी ठीक है।
सभी स्वस्थ्य हैं अच्छे।
युगल आदि भी ठीक है;
सभी कुशल से बच्चे।।
आऊँगा अब रोज आज से,
निश्चय करके मानें।
चाहे सूर्य चन्द्र बदले पथ,
पर मैं न रूकूं, यह जानें।।

ऊपर चित्र में नेपाल में भारत नेपाल सांस्कृति केन्द्र में आयोजित चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह में वहाँ के राजसभा की स्थाई समिति के सदस्य भ्राता बालकृष्ण सम्त्र जी, बी० के० राज० जी, भारतीय राजदूत भ्राता एन० पी० जैन तथा नेपाल के उद्योगपति भ्राता प्रहलाद राय अग्रवाल जी बैठे हैं।

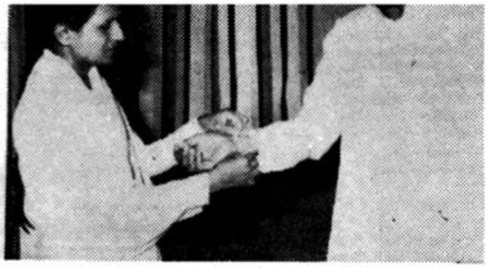

ऊपर चित्र में ब्र० कु० गीता जी पोरबन्दर के प्रमुख व्यापारी भ्राता नरसिंह भाई को पवित्रता की राखी बाँध रही हैं।

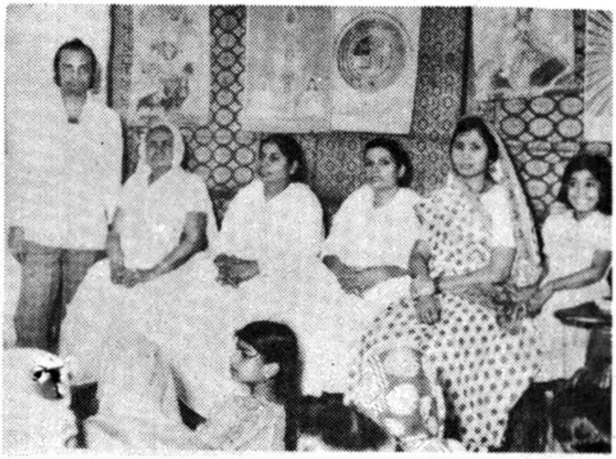

ऊपर चित्र में सतारा सेवाकेन्द्र की ओर से सत्य गीता ज्ञान सप्ताह समारोह में वहाँ के प्रसिद्ध व्यापारी भ्राता आनन्द वाघवा भाषण कर रहे हैं तथा बी० के० शान्ता जी व बी० के० नलनी जी मंच पर बैठी हैं।

नीचे चित्र में ब्र०कु० सावित्री जी सिकन्द्राबाद (उ० प०) के प्रमुख व्यापारी भ्राता कमल जैन जी को राखी बाँध रही हैं। साथ में वहाँ के एक अन्य व्यापारी भ्राता मनोहरलाल व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

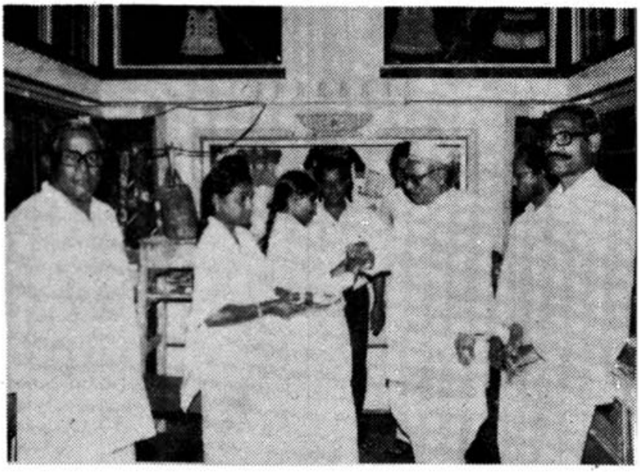

इस चित्र में इलाहाबाद के प्रमुख व्यापारी लोग वहां के सेवाकेन्द्र पर स्नेह मिलन के कार्यक्रम में ब्र० कु० कमलेश जी द्वारा ईश्वरीय ज्ञान व राजयोग की व्याख्या सुन रहे हैं।

चित्र में रक्षाबन्धन पर शाहदरा सेवाकेन्द्र पर आयोजन में सुप्रसिद्ध वानप्रस्थी युगल एवं अन्य प्रमुख व्यक्तियों के साथ ब्र० कु० कमला जी, ब्र० कु० प्रेम व ब्र० कु० कुसुम जी बैठी हैं।

जन्माष्टमी पर्व पर डसूआ में वहां के कर्नल चौधरी को ब्र० कु० राजकुमारी कृष्ण का चित्र भेंट कर रही हैं। साथ में उनकी युगल खड़ी हैं।

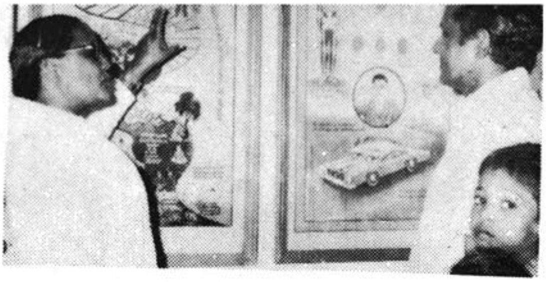

ब्र० कु०गोमती किशन गढ़ में आयोजित प्रदर्शनी के चित्रों की व्याख्या वहां के अग्रवाल समाज के अध्यक्ष भ्राता श्रवण कुमार को दे रही हैं।

मुम्बई में आयोजित स्वागत समारोह में भ्राता रमेश जी अपने विदेश-यात्रा का अनुभव सुना रहे हैं। मंच पर पुष्पा बहन, दादी निर्मलशान्ता जी, दीदी मनमोहिनी जी, बृजइन्द्रा जी, बृजपुष्पा जी नलिनी बहन बैठी हैं।

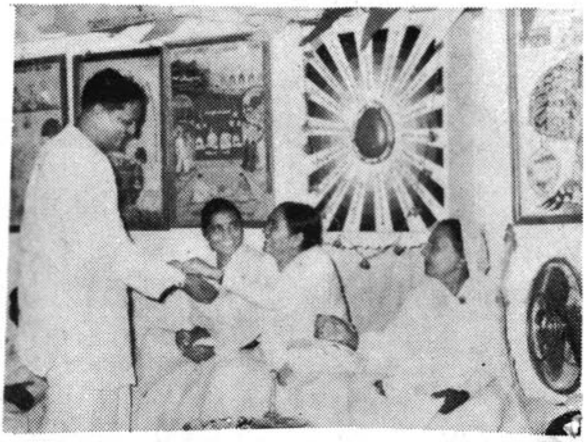

मोंडासा सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित समारोह में ब्र० कु०ज्योति वहां के प्रमुख उद्योगपति भ्राता नवनीत भाई को राखी बांध रही हैं।

कृणानगर (दिल्ली) में जन्माष्टमी पर सजाई गई झांकियों का दृश्य।

सोलापुर में जन्माष्टमी मोहत्सव के अवसर पर मुख्य अतिथि भ्राता माधवराव कोंतम के साथ ब्र० कु०बहनें बैठी हैं।

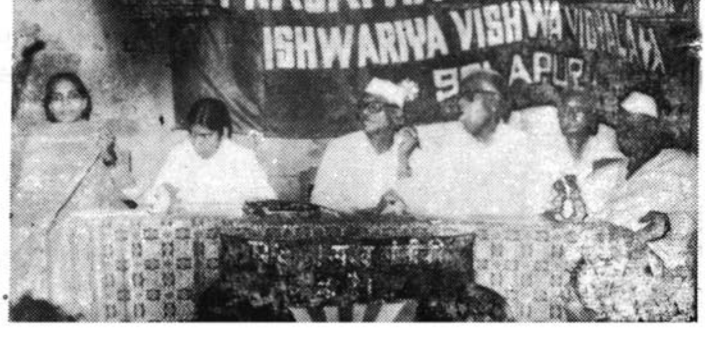

मन्डी डववाली के पुलिस स्टेशन में आयोजित रक्षा बन्धन समारोह में एस० एच० ओ० भ्राता रामलुभाया मिलख को ब्र० कु० सन्तोष ईश्वरीय साहित्य भेंट कर रही हैं।

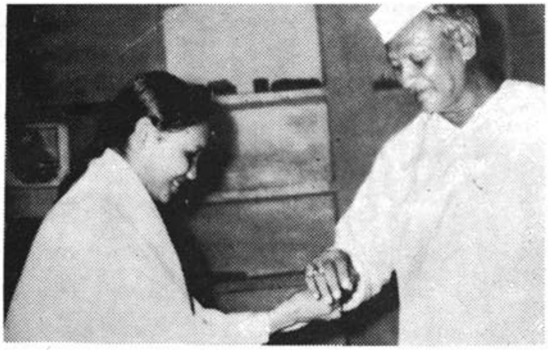

विश्व-विख्यात शहनाईवादक पद्म-विभूषित उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को ब्र० कु० परनीता राखी बाँध रही है।

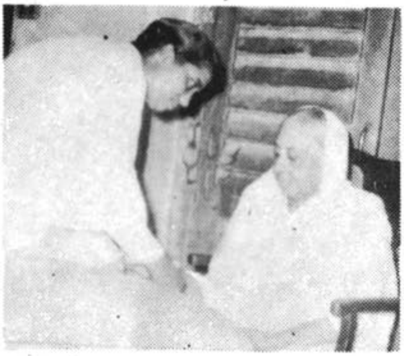

धनकनाल (उड़ीसा) की राजमाता रत्नगिरी देवी को ब्र० कु० राखी बांध रही हैं।

लखनऊ में ब्र० कु० भगवती वहाँ के स्कूल के प्रिंसिपल व मालिक भ्राता कृष्णचन्द्र तथा उसकी लड़की को राखी बांध रही है।

ब्र० कु० निरुपमा पुरी की चर्च के पादरी को राखी बांध रही हैं।

वाराणसी में ख्याति प्राप्त संगीतज्ञ तबला वादक पद्माश्री पं० किशन महाराज को ब्र० कु० कमला राखी बाँध रही हैं।

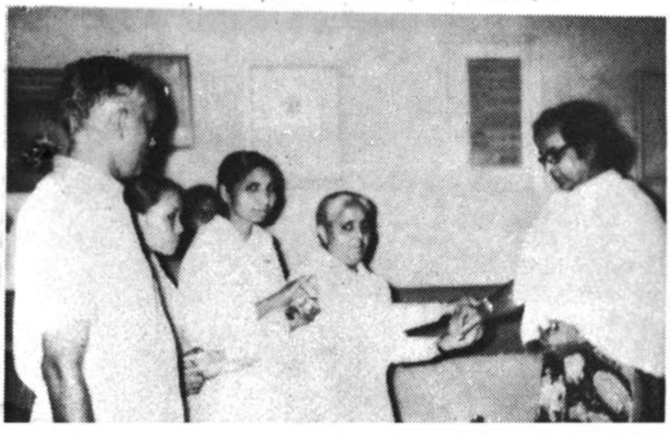

लखनऊ में ब्र० कु० सत्ती मिलिट्री के जवानों को राखी बांध रही है।

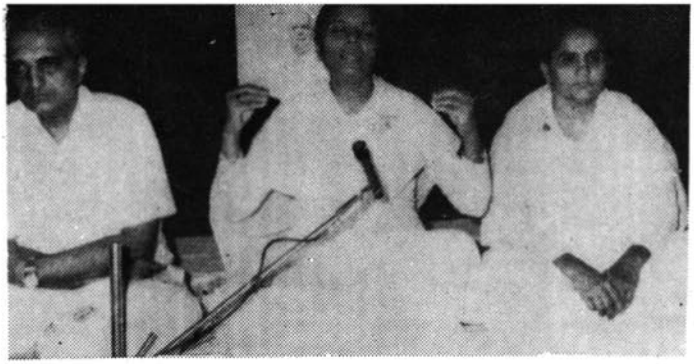

जालन्धर के आध्यात्मिक संग्रहालय में आयोजित कार्यक्रम में ब्र० कु० ऊषा जी भाव-विभोर मुद्रा में अपना अनुभव सुना रही हैं। ब्र० कु० राज जी व भ्राता रमेश जी मंच पर बठे हैं।

झांसी जेल के महा प्रबन्धक भ्राता के० मुनि अप्पा मोमबत्ती जलाकर झांसी सेवा केन्द्र द्वारा दर्शाई झांकियों का उद्‌घाटन कर रहे हैं। ब्र० कु० द्रौपदी व अन्य बहन भाई साथ में खड़े हैं।

माणवड ग्राम में आयोजित प्रदर्शनी का उद्‌घाटन भ्राता द्वारका प्रसाद धेलाणी कर रहे हैं। उनके साथ ब्र० कु० जशुभाई व बहन कुमुद व ज्योत्सना खड़ी हैं।

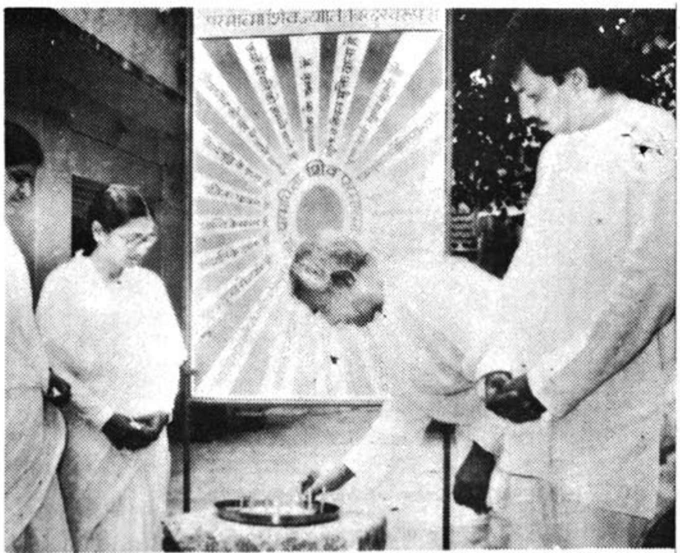

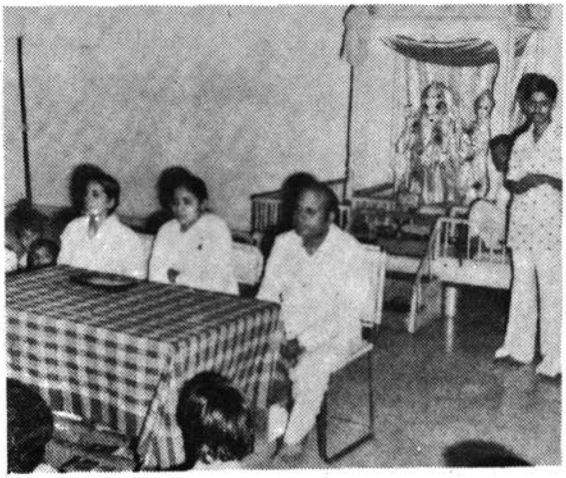

इन्दौर के लक्ष्मी नारायण मन्दिर में राजयोग फिल्म प्रवचनों के कार्यक्रम में, ब्र० कु० इन्द्रा जी प्रवचन कर रही हैं। साथ में ब्र० कु० हेमा व विनय भाई बैठे हैं।

आगरा सेवा केन्द्र की ओर से मिलिट्री कालोनी में आयोजित चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्‌घाटन आर्मी के प्रोडक्शन मैनेजर कर्नल बलराज शर्मा ने किया ब्र० कु० विमला जो उन्हें चित्रों की व्याख्या दे रही हैं।

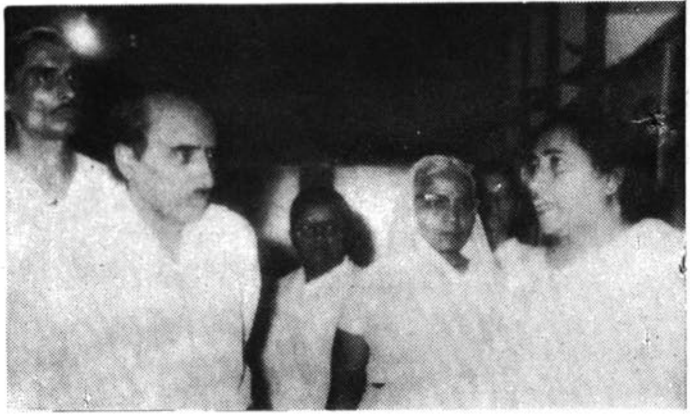

नवरात्रि का त्योहार और अर्थ-बोध

चिरातीत से भारत के लोग आश्विन मास की शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी तक नवरात्रि का त्योहार भक्ति-भावना और उत्साह से मनाते चले आते हैं। इस त्योहार के प्रारम्भ में ही लोग 'कलश' की स्थापना करते हैं और अखण्ड दीप जगाते हैं जो लगतार नव दिन और रात जगता रहता है। वे इन दिनों कन्या-पूजन करते, नियम पालन करते, जागरण तथा व्रत-उपवास करते तथा दुर्गा, काली, सरस्वती आदि का पूजन करते हैं।

प्रश्न उठता है कि 'आदि शक्ति' का क्या स्वरूप है, सरस्वती, दुर्गा आदि का क्या वास्तविक परिचय है और अतीत काल में कन्याओं ने क्या महान कार्य किया था जिस की स्मृति में आज तक नवरात्रि में उनका पूजन होता है ?

नवरात्रि से सम्बन्धित तीन प्रसंग

इस विषय में जानकारी के लिये नवरात्रि से सम्बन्धित तीन मुख्य प्रसंग, जिनको कथा रूप में भक्त-जन सविस्तार सुना करते हैं सहायक सिद्ध हो सकते हैं। उनमें से एक आख्यान में तो यह कहा गया है कि पिछली चतुयुर्गी के अन्तिम चरण में जब विश्व-विनाश निकट था, तब मधु और कैटभ नामक असुरों ने देवी-देवताओं को अपना बन्दी बनाया हुआ था और तब श्री नारायण भी मोह निद्रा में सोये हुए थे। तब ब्रह्मा जी के द्वारा आदि कन्या प्रगट हुई। उसने नारायण को जगाया और उन्होंने मधु तथा कैटभ का नाश कर देवी-देवताओं को मुक्त कराया। दूसरे आख्यान में कहा गया है कि 'महिषासुर' नामक असुर ने स्वर्ग के सभी देवी-देवताओं को पराजित किया हुआ था। त्रिदेव की शक्ति से एक कन्या के रूप जो 'आदि शक्ति' प्रगट हुई, वह दिव्य अस्त्रों-शस्त्रों से सुसज्जित थी, त्रिनेत्री थी और अष्ट भुजाओं वाली थी। उसने महिषासुर का वध किया और देवी-देवताओं को मुक्त कराया। तीसरे प्रसंग में कहा गया है कि सूर्य के वंश में शुम्भ और निशुम्भ नामक दो असुर पैदा हुए। उनके प्रधान कार्यकर्त्ता का नाम रक्त बिन्दु था, सेनापति का नाम धूम्रलोचन था और उसके दो मुख्य सहायकों का नाम चण्ड और मुण्ड था। शिव जी की शक्ति से 'आदि कुमारी' प्रगट हुई और उस के विकराल रूप से काली प्रगट हुई। उसने चण्ड-मुण्ड का विनाश किया और फिर कालिका ने अपनी योगिनी शक्ति द्वारा धूम्रलोचन और रक्त-बिन्दु का भी विनाश किया। आख्यान में बताया गया है कि रक्त बिन्दु की यह विशेषता थी कि यदि उसके रक्त का एक भी बिन्दु गिर जाता तो उस बीज से एक और असुर पैदा हो जाता था। आदि ने रक्त बिन्दु का इस तरह विनाश किया कि उसका एक भी बिन्दु अथवा बीज नहीं रहा।

शब्दार्थ या भावार्थ

अब देखा जाय तो वास्तव में तो इन आख्यानों में रूपक अलंकार के द्वारा विश्व के एक बहुत ही महत्वपूर्ण वृत्तान्त का वर्णन किया गया है। परन्तु लोग प्रायः इसका शब्दार्थ ही ले लेते हैं जिससे वे सत्य-बोध से वञ्चित रह जाते हैं। वास्तव में किसी एक या किन्हीं दो असुरों द्वारा सभी देवी-देवताओं के परास्त होने की बात शब्दार्थ में तो किसी के गले के नीचे उतरना भी मुश्किल है। हाँ, भावार्थ में यह वृत्तान्त बहुत महत्वपूर्ण है। वास्तव में 'मधु' और 'कटभ' 'मीठे' और 'विकराल' अर्थ के वाचक होने से 'राग' और 'द्वेष' के प्रतीक हैं और 'असुर' शब्द 'आसुरी लक्षणों' या 'मनोविकारों' का बोधक है। 'काम', 'मोह' और 'लोभ' 'मधु' नामक 'असुर' हैं और 'क्रोध' तथा 'अहंकार', 'कैटभ' हैं। इसी प्रकार 'महिष' शब्द का अथ 'भैंस' है। भैंस 'मन्द बुद्धि', 'अविवेक' तथा तमोगुण का प्रतीक है। अभी तो एक प्रश्नोक्ति भी है—"अक्ल

बड़ी कि भैंस ?" 'धूम्रलोचन' का अर्थ है धुएँ वाली आँखें । अतः यह ईर्ष्या और बुरी दृष्टि का वाचक है। शुम्भ और निशुम्भ हिंसा और द्वेष आदि के वाचक हैं।

वास्तविक भाव

अतः तीनों आख्यानों का वास्तविक भाव यह है कि पिछली चतुर्युगी के अन्त में जब विनाश काल निकट था और सृष्टि पर अज्ञान तथा तमोगुण रूप रात्रि छाई हुई थी तब राग (मधु) और द्वेष (कैटभ) ने (शुम्भ और निशुम्भ) उन सभी नर-नारियों को जो कि सतयुग में दिव्यता सम्पन्न होने से देवी-देवता थे परन्तु धीरे-धीरे अपवित्रता की ओर अग्रसर होते आये थे, अपना बन्दी बना रखा था। यहाँ तक कि सतयुग के आरम्भ में जो देव-शिरोमणी 'श्री नारायण' थे, अब वे भी जन्म-जन्मान्तर के बाद मोह-निद्रा में विलीन थे। ऐसी धर्म-ग्लानि के समय परमपिता शिव ने त्रिदेव के द्वारा भारत की कन्याओं को ज्ञान, योग तथा दिव्य गुण रूपी शक्ति से सुसज्जित किया। यह ज्ञान ही उनका तीसरा नेत्र था और अन्तर्मुखता, सहनशीलता आदि दिव्य शक्तियाँ ही उनकी अष्ट भुजाएँ थीं। इन्हीं शक्तियों के कारण वे 'आदि शक्ति' अथवा 'शिव शक्ति' कहलायीं। इन आदि कुमारियों अथवा शक्तियों ने भारत के नर-नारियों को जो कि सतयुग में देवी-देवता थे, जगाया और उन्हें उत्साहित करके आसुरी प्रवृत्तियों का नाश किया—ऐसा कि उसका बीज, अंश या बिन्दु भी नहीं रहने दिया कि जिससे संसार में फिर आसुरीयता पनप सके। उन द्वारा ज्ञान दिये जाने की यादगार के रूप में आज नवरात्रियों के प्रारम्भ में 'कलश' की स्थापना की जाती है। उन द्वारा जगाये जाने की स्मृति में आज भक्तजन जाग्रण करते हैं तथा योग द्वारा आत्मिक प्रकाश किये जाने के कारण ही वे अखण्ड दीप जगाते हैं। उन कन्याओं के महान् कर्त्तव्य के कारण ही वे हर वर्ष इन दिनों कन्या-पूज़न करते हैं और सरस्वती, दुर्गा आदि से प्रार्थना करते हैं कि—"हे अम्बे, हे माँ, मेरी ज्योति जगा दो और मुझे ऐसी शक्ति प्रदान करो कि मेरे अन्तर का अन्धकार मिट जाय!"

आत्मा का दीपक जगाओ!

परन्तु जन-जन को यह मालूम नहीं है कि अब पुनः कलियुग का समय चल रहा है और पुनः आसुरीयता तथा भ्रष्टाचार का बोलबाला है तब परमपिता शिव पुनः कन्याओं को ज्ञान शक्ति देकर पुनः जन-जन की आत्मिक ज्योति जगा रहे हैं और आसुरीयता के अन्त का कार्य करा रहे हैं और इसलिये हम सभी का कर्त्तव्य है कि हम केवल जयघोष या कर्म काण्ड में ही न लगे रहें बल्कि अपने मन में बैठे महिषासुर, मधु-कैटभ, रक्त बिन्दु या धूम्रलोचन का नाश कर दें। वास्तव में ज्ञान द्वारा आत्म-जागृति जगाना ही सच्चा दीप जगाकर सही रूप में नवरात्रि मनाना है। यही नारायण द्वारा मोह-निद्रा को छोड़ना तथा मधु-कैटभ को मारना या (आध्यात्मिक) शक्ति द्वारा महिषासुर किंवा धूम्रलोचन और रक्त बीज आदि का संहार है।

आवश्यक सूचना

कृपया ज्ञानामृत एवं वर्ल्ड रिन्यूवल के सदस्यों का शुल्क मेरे नाम पर न भेजा करें बल्कि निम्नलिखित नाम से भेजें :–

(1) विशम्बर सहाय त्यागी अथवा ब्रह्माकुमारी चक्रधारी 19/17 शक्ति नगर, दिल्ली-7

(2) ब्रह्माकुमार सुन्दरलाल अथवा ब्रह्माकुमारी चक्रधारी अथवा विशम्बर सहाय त्यागी 19/17, शक्ति नगर, दिल्ली-7

ली-7

अगर निरन्तर योगी बनना चाहते हो तो

ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश, मधुबन, आबू

१. निरन्तर स्वयं को चमकता हुआ ज्योति बिन्दु सितारा समझ कर सम्मुख आने वाले व्यक्ति की भृकुटि के मध्य चमकती हुई आत्मा देख अपनी नयनों रूपी खिड़कियों से शान्ति, आनन्द और प्रेम के किरणों रूपी गुलाब बाशी से स्वागत करें।

२. अन्तर्मुखता की गुफा में बैठकर बाह्यमुखता रूपी दरवाजा बन्द करके एक शिव बाबा की याद में मग्न हो जाओ तो माया बुद्धियोग कभी भी तोड़ नहीं सकेगी।

३. सदैव याद रखो कि "मैं रूहानी योद्धा हूँ", योद्धा दुश्मन से हमेशा सावधान रहता है। माया दुश्मन अगर हमें हरा देती है तो शिव बाबा से बुद्धि-योग टूट जाता है। जब शक्तिशाली बनकर माया को हरा देते हैं तो हमारा बुद्धियोग निरन्तर बाबा से लगा रहेगा। फलस्वरूप दुश्मन की हार देखकर अपार खुमारी चढ़ी रहेगी जिससे हमारे पैर सदैव इस धरती के ऊपर रहेंगे।

४. किसी के अवगुण रूपी गन्दगी या परचिन्तन रूपी किचड़े को अपने चित्त पर उठाकर इधर-उधर फेंककर वायुमण्डल दुषित न करें। सदा फालो फादर करें और लक्ष्य को सामने रखकर स्वचिन्तन में मग्न रहने का अभ्यास करें।

५. कर्म करते समय योगी का कर्म पर प्रभाव हो न कि कर्म का योगी पर प्रभाव, तो कर्म का बोझ आत्मा पर न होने से आत्मा हल्की होकर ऊपर उड़ने लगेगी। यह है कर्म करने की कला या कुशलता, इस कला से ही कर्म को कर्म-योग में परिवर्तित करके निरन्तर योगी बन सकते हैं।

६. सदैव शिव बाबा द्वारा बतायेहुये ज्ञान रत्नों पर विचार मनन करके बुद्धि को व्यस्त रक्खें। तो मनन शक्ति से बुद्धि शक्तिशाली बनती जाएगी और बुद्धि योग बाबा से लगा रहेगा।

७. अपना सन्सार एक शिव बाबा को ही बना कर सभी सम्बन्धों की अनुभूति का रस एक शिव बाबा से ही प्राप्त करें तो बुद्धि योग इधर-उधर नहीं भट-केगा।

८. मनसा में किसी भी आत्मा के प्रति व्यर्थ संकल्प या अशुद्ध संकल्प न चलाकर सूक्ष्म पाप होने से बचने का अभ्यास करें, नहीं तो यह सूक्ष्म पाप आत्मा को ऊपर परमधाम की ओर उड़ने नहीं देगा।

९. वाचा द्वारा सदैव वरदानी बोल या दूसरों का उमंग, उल्लास बढ़ाने वाले मधुर वचन बोलकर खुशी का महादान करते चलें। किसी के प्रति व्यर्थ बोल बोलकर आत्मघात रूपी पाप के भागी न बनें।

१०. दूसरों को आगे जाते देख रीस करना न सीखो। और भी खुश होकर उसका महिमा के बोल रूपी फूलों से स्वागत करें। यह कभी न भूलें कि दूसरों को आगे बढ़ाना ही हमारा आगे बढ़ना है।

११. किसी भी आत्मा के गुणों पर प्रभावित न हो जाओ, लेकिन उसको बनाने वाले शिव बाबा के ही गुण गान करके बाबा पर ही फ़िदा हो जाओ।

१२. इस पुरानी जरजरीभूत दुनिया के वैभव, वस्तुओं से या मायावी आर्कषणों से बेहद के वैराग्य की स्थिति बनायें। तृष्णाओं के पीछे अपने चित्त की शान्ति को भंग न करें।

१३. जैसे पानी पर लाठी मारने से लकीर एक सेकंड में जैसे की वैसी हो जाती है, ऐसे ही कोई समस्या या विघ्न आने पर उसका मन पर वार

होता है तो मन की हलचल को एक सेकंड में अचल बनाने का अभ्यास करें।

१४. संगम युग के अमूल्य समय के एक-एक सेकण्ड को अनेक पद्मों के समान कीमती समझ हर सेकंड बाबा की याद में सफल करने का प्रयास करें। न कि पत्थर या कौड़ी की तरह व्यर्थ गवाँकर उसे नष्ट करें।

१५. कुछ भी हो अमृत वेले का योग मिस न करें। क्योंकि यह समय-अमरनाथ शिव पिता से अमर वरदान प्राप्त करने का है। सर्वशक्तियों का पावरहाऊस (Power house) शिव बाबा से बुद्धि योग द्वारा आत्मा को सर्वशक्तियों से सम्पन्न बनाकर सारे दिन में माया दुश्मन को चुनौती दे सकते हैं। अमृत वेले का योग मिस करना अर्थात् शिव बाबा का सबसे बड़ा अनादर (disregard) करना है।

१६. परमधाम (sweet palace) रूपी घर में अति मीठे शिव बाबा के सामने बैठकर माया प्रूफ दरवाजा बन्द कर दे, तो सदैव आपके बुद्धिरूपी नेत्र में एक शिव बाबा ही नूर के समान समाया रहेगा और अति शान्त, अति मीठी एकरस अवस्था को प्राप्त करेंगे।

१७. "मैं कौन हूँ" यह स्वभाव की चाबी चराने के लिए माया चारों ओर घूमती रहती है कि कहीं एक सेकंड भी अलबेलेपन का झुटका आये तो मैं चाबी चुराऊँ अर्थात् स्वमान का होश उड़ाकर बेहोश कर दूँ और सारा दिवाला निकाल दूँ, इसलिए सदा स्वमान के होश में रहने के लिए बुद्धि पर सावधान (Attention) रूपी पहरेदार से पहरा दिलाओ।

१८. अगर कोई निन्दा करे या गाली भी दे, तो गालियों को फूलों के रूप में हँसकर स्वीकार करें और मन की शीतल तथा शान्त अवस्था को कायम रक्खें क्योंकि शीतल मन में ही प्यारे शिव बाबा की याद ठहर सकती है।

१९. अपने ज़िद्द के स्वभाव को सरल स्वभाव में परिवर्तित कर आपस में स्वभाव संस्कारों का मिलन करने का अभ्यास करें, नहीं तो भाव-स्वभाव के टकराव में आने से शिव बाबा से बुद्धि योग टूट जाएगा और संगम युग के अतिन्द्रिय सुख के झूले से उतर कर माया के रूलाने वाले झूले में झूलने लगेंगे।

२०. कुछ भी हो प्रति दिन "याद का चार्ट" रक्खें, किसी भी कारण से चार्ट रखना बन्द न करें क्योंकि चार्ट रखना उन्नति के शिखर पर पहुँचने का एक मात्र साधन है।

गीत

ब्र० कु० श्रीकृष्णलाल घुरुपा, रांची

अरुण प्रकाश सखे चारों ओर निखर गया।
अद्भुत आनन्द एक कण-कण में बिखर गया।
गीत तुम्हें कौन सा सुनाऊँ
कैसे मिठास वह बताऊँ।।

ईश्वरीय ज्ञान मिला जगा मोह निंदिया से।
ब्रह्मलोक जा पहुँचा मिलने शिव बिंदिया से।
डूबा मन फेर नहीं पाऊँ
काहे अब मोह बन में आऊँ।।
कैसे मिठास वह बताऊँ।।

सुन्दर सुखद ब्रह्मलोक ही सबसे न्यारा है
शिव से ही योग लगा राह यह तुम्हारा है।
बार बार कितना समझाऊँ
चलो ज्ञान गंगा में नहाऊँ।

ज्योति स्वरूप आत्मरूप परमधाम वासी
छोड़कर विकर्म कर सुकर्म तू अविनाशी
फिर तो ब्रह्मलोक में बसाऊँ।
परमपिता से तुम्हें मिलाऊँ।।
कैसे मिठास वह बताऊँ।।

विजया दशमी अथवा दशहरा

क्या रावण मर चुका है या अभी जिन्दा है ?

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी तक नवरात्रि मनाने के बाद दशमी को भारत के लोग विजय पर्व अथवा दशहरा मनाते हैं। वे मानते हैं कि राम ने इसी दिन दस सिर वाले रावण पर विजय प्राप्त की थी। अत: वे शत्रु को परास्त करने के लिये इसे 'पुण्यतिथि' मानते हैं। उनका यह निश्चय है कि इस दिन सभी कार्य सिद्ध होते हैं। इसी दिन वे रावण के साथ मेघनाद और कुम्भकरण के बुत को जलाते हैं औंर शमी वृक्ष का भी पूजन करते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि शमी सभी पापों का नाश करने वाला और शत्रुओं को नष्ट करने वाला है।

आज़ रामकथा इतनी लोकप्रिय है कि भारत के बाहर भी कई देशों में लोग राम कथा सुनते और उसे नाटक रूप में देखते हैं। केवल आदि सनातन धर्म ही नहीं बल्कि बौद्ध, जैन आदि मतावलम्बी भी राम कथा को किसी-न-किसी तरह मानते हैं। इन्डोनेशिया देश में तो मुसलमान लोग भी इसे मंच पर अभिनय में लाते हैं। कम्बोडिया देश के राम मन्दिर (अंग-कोर वत्स) का नाम तो विश्व-विख्यात है। अवश्य ही यह कथा ऐसे पवित्र एवं महत्त्वपूर्ण वृत्तान्त को अभिव्यक्त करती है जिस कारण उसने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रियता और ख्याति प्राप्त कर ली है। हाँ, विभिन्न देशों, सम्प्रदायों और भाषाओं में जो रामायण मिलती है, उनमें अन्तर है। शोध कार्य करने वाले कहते हैं कि बालमीकि द्वारा कविता बद्ध किये जाने से पहले भी राम कथा लोक-गीतों आदि के रूप में प्रचलित थी। अत: समयान्तर में इसके प्रक्षिप्त होने की बात मानी जा सकती है।

एक बात जो प्राय: कही और मानी जाती है, यह है कि रावण कोई दस सिर वाला व्यक्ति रहा होगा। आज यदि आप किसी शरीर विज्ञान, स्नायुमण्डल विज्ञान या मस्तिष्क विज्ञान के ज्ञाता से पूछें तो वह आपको बतायेगा कि दस सिर वाला कोई मनुष्य नहीं हो सकता। मनुष्य के शरीर के सभी भाग जिस प्रकार मस्तिष्क से जुड़े हुए हैं और मस्तिष्क के भाग जिस-जिस कार्य के निमित्त हैं, उसको जानने वाला कोई भी व्यक्ति यह नहीं मानेगा कि किसी मानव तन धारी के दस सिर हो सकते हैं। फिर, लंका देश के लोग तो यह कहते हैं कि उनके देश के ऐतिहासिक अथवा प्रागैतिहासिक काल में 'रावण' नाम का तो कोई राजा हुआ ही नहीं। इसके अतिरिक्त 'रावण' और 'राम' दोनों का नाम एक-दूसरे के विपरीतार्थ के बोधक हैं क्योंकि 'रावण' का अर्थ 'रुलाने वाला' और 'राम' का अर्थ 'लुभाने वाला' है। अन्यश्च, सीता का जन्म एक सिता (खेत की एक मेढ़) में दबे हुए घट से होने की बात को भी लोगों का विवेक नहीं मानता क्योंकि आज तो वंशोत्पत्ति (Reproduction) की क्रिया को लोग वैज्ञानिक दृष्टि से जानते हैं। अत: इन तथा अन्य अनेक तथ्यों क आधार पर लोगों की यह मान्यता कि 'राम कथा' एक उच्च आध्यात्मिक सिद्धान्त और वृत्तान्त का बोध कराती है जो कि त्रेतायुग के राजा राम से सम्बन्धित न होकर जगत के रचयिता, 'राम' (परमात्मा) से सम्बन्धित है,

ठीक ही मालूम होती है। त्रेतायुगी श्री राजा राम के राज्य में तो दैहिक, दैविक या भौतिक ताप थे ही नहीं। तब तो कोई असुर, राक्षस या दैत्य इस धरा पर कहीं भी था ही नहीं कि उसका वध किया जा सकता। फिर, सीता-जैसी राम-परायण भगवती को तो न कोई बुरी दृष्टि से देख सकता था, न छू ही सकता था।

यदि इस दृष्टिकोण से सारी कथा पर विचार किया जाये तो यह समस्त विश्व ही सागर से घिरा होने के कारण एक विशाल टापू, द्वीप या महाद्वीप है। पहले यह विश्व सोने का था, धन-धान्य सम्पन्न था। अतः यह सृष्टि ही पुराकाल में सोने की लंका थी। धीरे-धीरे यहाँ के नर-नारी नैतिकता के ह्रास की ओर उन्मुख हुए अन्ततोगत्वा यहाँ धर्म-ग्लानि और अधोपतन की स्थिति पैदा हो गयी। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार—ये पाँच विकार हर नर और हर नारी के मन पर राज करने लगे। इसी भाव को स्पष्ट करने के लिए रूपक अलंकार में कहा गया है कि तब दस सिर वाले रावण का राज था क्यों कि ये विकार दुःखित करने वाले अथवा रुलाने वाले (रावण) हैं। चूँकि मुख को ही मनुष्य के मन का दर्पण कहा गया है, इसलिये उस समय के नर-नारी के पतन की अवस्था को व्यक्त करने वाला यह दस सिर वाला पुतला—रावण—प्रतीक रूप में बनाया जाता है।

उस धर्म-ग्लानि के समय, मन को हर्षित करने वाले गुण प्रायः लुप्त थे। गोया तब राम वन-वासी थे, तब हर आत्मा रूपी सीता परमात्मा रूपी राम को पुकार रही थी। तब सीता ने मर्यादा अथवा 'लक्ष्य' की रेखा का अतिक्रमण किया था। इसी को लक्ष्मण रेखा से बाहर निकलना कहा गया है। तब माया रूपी मारीच रूपी मृग अथवा लोभ ने आत्मा रूपी सीता को छल लिया था। तभी आत्माओं रूपी सीताओं का पाँच विकारों रूपी रावण ने अपहरण किया और उन्हें बन्दी (जीवन्बद्ध) बना दिया। तब इस संसार के लोग वानर सम ही हो गये थे। तब परमात्मा जिन्हें 'निराकार राम' भी कहा जाता है और रामेश्वर (शिव) भी, अवतरित हुए। उन्होंने वानर के समान काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से अभिभूत नर-नारी रूपी वानरों की सेना ली अर्थात् उन्हें अनुशासन-बद्ध किया और उन्हें योग रूपी शक्ति दी। उस वानर सेना द्वारा उन्होंने अब आसुरी अथवा राक्षसी लंका का विध्वंश कराया और आत्मा रूपी सीता को रावण की कैद से छुड़ाया। इस पुनीत वृतान्त के आधार पर आध्यात्मिक रामायण रची गयी जो कि समयान्तर में रूप बदलती गई।

आज यदि हम देखें तो फिर यह भूमण्डल रावणी लंका बना हुआ है। आज फिर शरीर रूपी पंचवटी में रहने वाली आत्मा रूपी सीता का अपहरण, भ्रष्टाचार रूपी रावण ने कर लिया है क्योंकि आत्मा ने जीवन के लक्ष्य और मर्यादा की लक्ष्मण रेखा को उलांघ दिया है।

रावण राज के बारे में कहा जाता है कि तब जल, अग्नि, वायु आदि सभी रावण के अधीन थे। आज भी हम टूटी खोलें तो जल आ जाता है, बट्टन दबायें तो अग्नि दीप्त हो जाती है, स्विच ऑन करें तो पवन चल पड़ती है। कहते हैं कि रावण ने एक ऐसी सीढ़ी बना ली थी कि वह चन्द्रमा तक पहुँच सकता था। आज ऐसे भी अन्तरिक्ष यान बन चुके हैं जिनसे मनुष्य चाँद पर जा उतरता है रावण राज में बस एक ही बात की कमी रह गई थी कि मुर्दे को ज़िन्दा नहीं किया जा सकता था। बस वही स्थिति

प्राचार्य व प्रधानाचार्यों को राखी बन्धन

श्री गंगानगर में आयोजित सर्व धर्म समन्वय गोष्ठी में राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्य भ्राता वी० वी० शर्मा जी अपने विचार प्रकट कर रहे हैं। मंच पर गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति व अन्य बहन-भाई बैठे हैं।

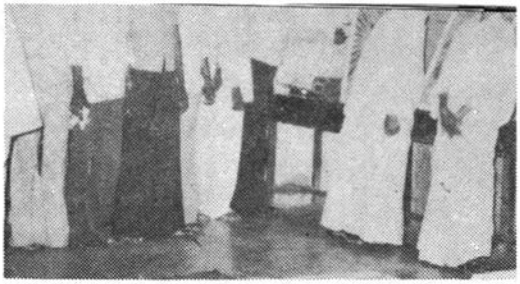

राजकोट सेवाकेन्द्र द्वारा सरदार ग्राम में आयोजित प्रदर्शनी का उद्‌घाटन वहां के हाई स्कूल के प्राधानाचार्य कर रहे हैं। मेंब्र० कु०भारती व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

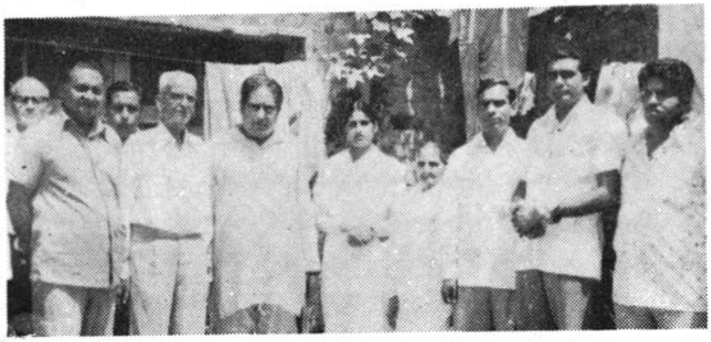

डी० ए० वी० कॉलेज के प्रधानाचार्य भ्राता ओमप्रकाश बग्गा को राखी बांधने के पश्चात ब्र० कु०सुषमा व अन्य बहन-भाई उनके साथ खड़े हैं।

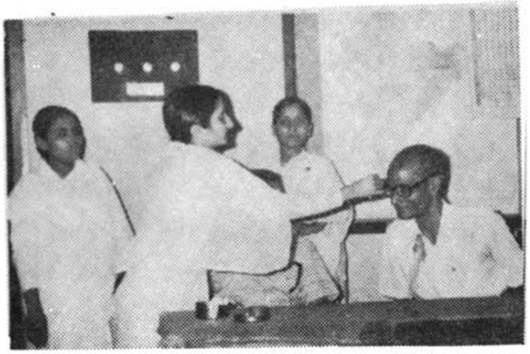

सम्बलपुर कॉलेज के प्रधानाचार्य को ब्र० कु० कमला पवित्रता की सूचक राखी बांधने के पश्चात् आत्म-स्मृति का तिलक लगा रही है।

रोपड़ गवर्नमेंट कॉलेज के प्रधानाचार्य भ्राता ओमप्रकाश शर्मा कोब्र० कु०राजकुमारी राखी बांध रही हैं।

नागपुर मेंब्र० कु०पुष्पा जी नेशनल फायर कॉलेज होमगार्ड के निर्देशक भ्राता के० के० मलहोत्रा को बांध रही है।

अहमदाबाद सेवाकेन्द्र द्वारा संगारेड्डी, ग्राम में आयोजित कार्यक्रम ब्रं० कु० बहनें प्रवचन करते हुए। कुर्सी पर वैश्य संघ के भ्राा पाण्डेय गुप्त तथा हाई स्कूल के रिटायर्ड प्रधानाचार्य वरप्पा जी बैठे हैं।

अमरेली सेवा केन्द्र द्वारा बावरा शहर में आयोजित प्रदर्शनी के चित्रों की व्याख्या वहां के प्रमुख व्यक्ति भ्राता मनु भाई खख्खर को ब्र० कु० मिता बहन कर रही हैं।

ईलकल में आयोजित रक्षा बन्धन समारोह में महिला मण्डल की अध्यक्षा बहन धन्नवसम्मा, आर्ट व साइंस कालेज के प्रधानाचार्य व अन्य प्रमुख व्यक्ति वहां के बहन-भाईयों के साथ खड़े हैं।

इन्जनियरों व डाक्टरों के लिए भाव नगर में आयोजित राजयोग शिविर का उद्घाटन डा० डी० एन० मेहता दीप जला कर कर रहे हैं। ↓

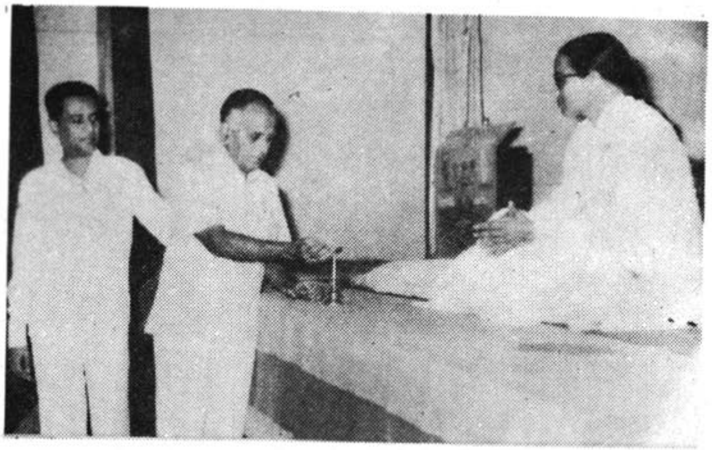

शालीमार बाग (दिल्ली) में शक्तिनगर सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित समारोह में ब० कु० चक्रधारी प्रवचन कर रही हैं।

पुरी के बार-एसोशियेशन के प्रधान भ्राता द्वारका नाथ मिश्रा को ब्र०कु० निरुपमा पवित्रता की सूचक राखी बांध रही हैं।

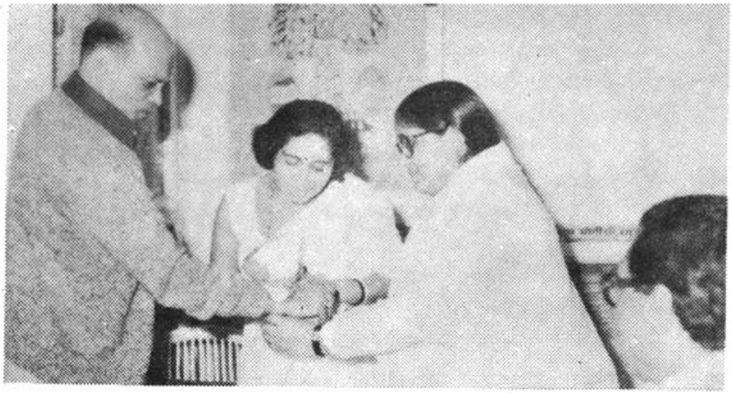

बीदर में एयर फोर्स के चीफ कमाण्डर भ्राता दुष्यन्त-सिंह को ब्र०कु० सन्तोष जी राखी बांध रही हैं। साथ में उनकी धर्म पत्नी प्रसन्न मुद्रा में खड़ी हैं।

दसुआ में वहां के रिटायर्ड कर्नल पवारजी तथा म्यूनिसिपल कमिश्नर भ्राता लहोरी आदि को पवित्रता की सूचक राखी बांधने के पश्चात् ब्र०कु० राजकुमारी व अन्य बहन भाई उनके साथ खड़े हैं।

जलगांव सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का उद्घाटन करने के पश्चात् वहां के कृषि अधिकारी भ्राता देशमुख जी प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर भ्राता मदाने व अन्य वक्तागण बैठे हैं।

शिमला में एयर फोर्स के आफिसर्स को राखी बांधने के पश्चात् ब्र०कु० बहनें एयर कमाण्डर स्क्वांडर लीडर व अन्य आफिसर्स के साथ खड़ी हैं।

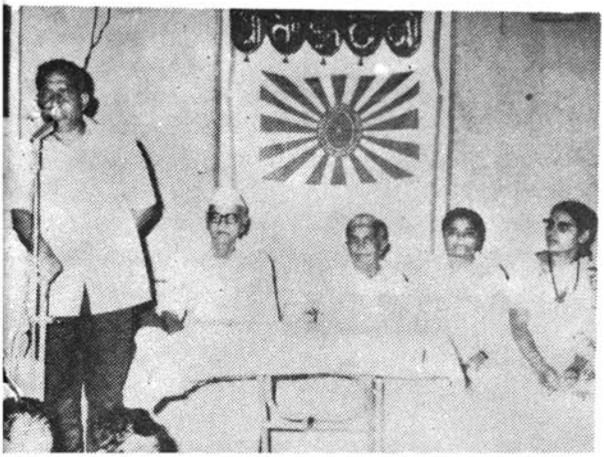

मिलिटरी आफीसर को राखी बन्धन

जेत पुर में लायन्स क्लब के प्रमुख भ्राता शम्भु भाई को ब्र०कु० वनिता जी पवित्रता की सूचक राखी बांध रही हैं।

हुबली की एन० सी० सी० के कमाण्डर मेजर मुकर्जी को ब्र०कु० कलावती जी राखी बांध रही हैं।

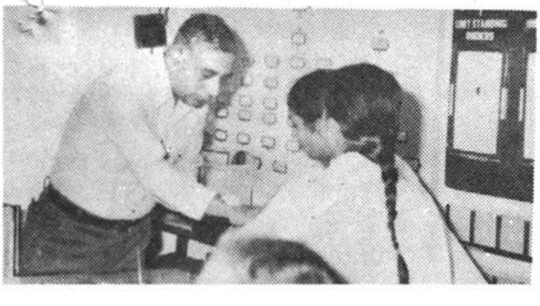

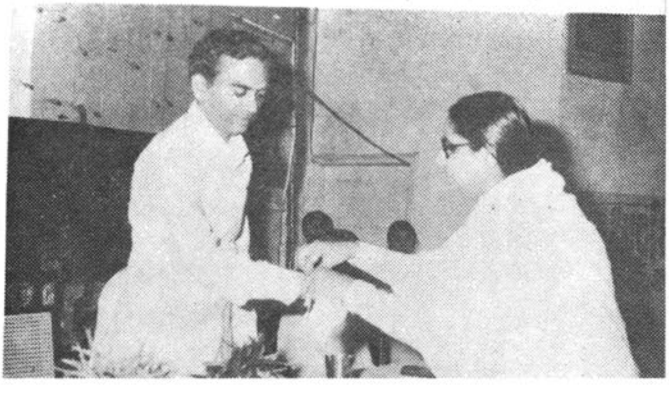

नगरपालिका के अध्यक्ष व कमिश्नर को राखी बन्धन

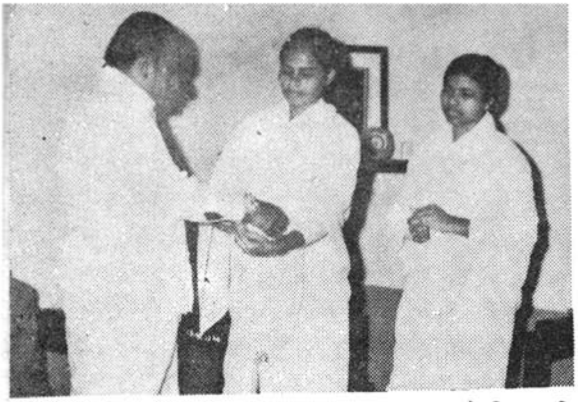

ब्र० कु० निर्मला जी हुब्ली व धारवाड़ नगर पालिका के कमिश्नर भ्राता जी० जी० पुरोहित को पवित्रता की सुचक राखी बांध रही हैं।

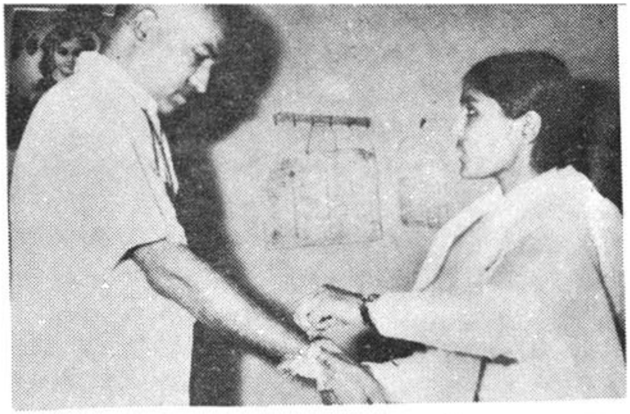

ब्यावर की नगर परिषद के कमिश्नर भ्राता रंगबहादुर को अनुराधा बहन राखी बांध रही हैं।

खेड़ब्रहमा में ब्र० कु० ज्योति वहां के मामलतदार भ्राता जे.डी० ऐताणी को राखी बांध रही हैं। साथ में राजेश्री बैठी हैं।

वाराणसी नगरपालिका के प्रशासक भ्राता बृजमोहन बोहरा को राखी बांधते हुए ब्र० कु० सुरेन्द्र जी।

भ्राता डी. आर. पटवर्धन जी पूना में आयोजित रक्षा-बन्धन समारोह में अपने विचार प्रकट कर रहे हैं। वहां के मेयर ब्र० कु० बृजशान्ता व उर्मिला जी बैठे हैं।

गुलबर्गा सेवा केन्द्र द्वारा महबूब नगर में आयोजित कार्यक्रम में ब्र० कु० महादेवी जी प्रवचन कर रही हैं। मंच पर म्यूनिसपल-कमिश्नर, कालेज के प्रधानाचार्य व अन्य प्रमुख व्यक्ति बैठे हैं।

आज भी है। आज कुम्भकरण जैसे सुस्त और निद्रालु लोग भी हैं जो आलस्य से अभिभूत रहते हैं। आज मेघनाद, अर्थात् बादल की गर्जन—जैसी भयावह ध्वनि करने वाले, रौब से डराने वाले लोग भी हैं। हर नर-नारी के मन में रावण अथवा राक्षसी वृत्ति ही का राज है। आज राम का तो लोग केवल नाम ही लेते हैं, मन तो 'काम' ही के आधीन है अथवा बगल में तो छुरो हो है। रिश्वत, मिलावट, अपहरण, बलात्कार, अन्याय, अत्याचार, आतंक, पापाचार का बाज़ार गरम है। अतः समझ लेना चाहिये कि अब फिर इसका अन्त निकट है।

अतः अध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाय तो रावण अभी मरा नहीं है। हर वर्ष लोग लाखों, करोड़ों रुपये खर्च करके रावण का बुत ही जलाते हैं परन्तु रावण स्वयं तो अभो ज़िन्दा है। वह तो मनुष्य के मन में सिंहासनस्थ है। आश्चर्य की बात है कि लोग हर वर्ष रावण के पुतले को हर पिछले वर्ष की अपेक्षा अधिक ही ऊँचा बनाते हैं और दूसरी ओर भ्रष्टाचार, पापाचार एवं राक्षसाचार रूपी रावण भी बड़ा होता जा रहा है। आज समाचार पत्रों में हम हर आये दिन अपहरण ही नहीं बल्कि बलात्कार के घिनौने वृत्तान्त पढ़ते हैं। आज कौन है जिसके मन में काम, क्रोधादि विकार रूपी रावण राज नहीं कर रहा ?

अब हमें चाहिए कि राम कथा के उपरोक्त आध्यात्मिक रहस्य को समझ कर हम सही अर्थ में राम को अपने मन में बसायें और पाँच विकारों रूपी रावण को ज्ञान रूपी राम बाण से मार कर योग रूपी अग्नि से इस को जलायें। इस से ही रावण का नाश होगा। वरना तो अभी रावण मरा नहीं है, अभी तो उसका पुतला ही जला है।

"वह क्या है ?"

ले० ब्र० कु० सुरेश, फ़रीदाबाद

जिसका पहला अक्षर प्रजा में है, राजा में नहीं।
जिसका दूसरा अक्षर जापान में है, जर्मन में नहीं।
जिसका तीसरा अक्षर पिया में है, प्रेमी में नहीं।
जिसका चौथा अक्षर ताकत में है, कमजोरी में नहीं।
जिसका पाँचवाँ अक्षर ब्रह्म में है, लोक में नहीं।
जिसका छठा अक्षर हॉकी में है, फुटबॉल में नहीं।
जिसका सातवाँ अक्षर मानव में है, दानव में नहीं।
जिसका आठवाँ अक्षर कुमार में है, लड़के में नहीं।
जिसका नौवाँ अक्षर महान में है, जहान में नहीं।
जिसका दसवाँ अक्षर रिश्ते में है, नाते में नहीं।
जिसका ग्यारहवाँ अक्षर ईश्वर में है, भगवान में नहीं।
जिसका बारहवाँ अक्षर शंका में है, समाधान में नहीं।
जिसका तेरहवाँ अक्षर वर में है, दान में नहीं।
जिसका चौदहवाँ अक्षर रीस में है, सन्तोष में नहीं।
जिसका पन्द्रहवाँ अक्षर यौवन में है, जवानी में नहीं।
जिसका सोलहवाँ अक्षर विजय में है, जय में नहीं।
जिसका सत्रहवाँ अक्षर शक्ति में है, भक्ति में नहीं।
जिसका अट्ठारहवाँ अक्षर वास्तव में है, असलियत में नहीं।
जिसका उन्नीसवाँ अक्षर विकृत में है, मूल में नहीं।
जिसका बीसवाँ अक्षर ध्वज में है, पताका में नहीं।
जिसका इक्कीसवाँ अक्षर लव में है, प्यार में नहीं।
जिसका बाइसवाँ अक्षर यम में है, राज में नहीं।

यदि आप ढूँढने और समझने में असफल रहे हैं तो सामने देख लीजिए।

"प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय"

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० सुन्दरलाल, कमला नगर दिल्ली

विभिन्न सेवा-केन्द्रों द्वारा दस-सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत तथा रक्षा-बन्धन पर की गई ईश्वरीय सेवाओं का बहुत ही उत्साह-जनक समाचार मिला है जिसका संक्षिप्त विवरण उद्धृत है :—

कटनी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी—कटनी सेवा-केन्द्र की ओर से शान्ति नगर कालोनी में आध्यात्मिक प्रदशनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। जिससे अनेक व्यापारियों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने लाभ उठाया तथा स्थानीय समाचार पत्रों में भी इसका समाचार प्रकाशित हुआ जिसमें से 'महाकौशल, केसरी, दैनिक मध्य प्रदेश, जन्मेजय तथा भारती समाचार पत्रों का नाम उल्लेखनीय है।

सोनीपत में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—सोनीपत सेवा-केन्द्र की ओर से जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक, प्रवचनों, प्रदर्शनी एवं प्रोजैक्टर शो का आयोजन किया गया। वहाँ के अन्ध-विद्यालय, हरियाणा कृषि विश्व-विद्यालय, बत्रा कालोनी, राम-बाजार देव नगर आदि स्थानों पर आयोजित कार्यक्रम बड़े ही सफल रहे। ग्राम साँपला व हरसाना में भी प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया 'समाज सुधा' नामक पत्रिका के सम्पादक, सह-सम्पादक व अन्य कर्मचारियों को भी ईश्वरीय सन्देश दिया तथा उसमें १० सूत्री-कार्यक्रम प्रकाशित हुआ तथा रक्षा-बंधन समारोह भी बड़ी धूम-धाम से मनाया गया।

राँची के जगन्नाथ मेले में आध्यात्मिक प्रदर्शनी—राँची के प्रसिद्ध 'जगन्नाथ मेले' में सेवा-केन्द्र की ओर से आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया तथा अनेकानेक लोगों को अवगुणों को छोड़कर दैवीगुण धारण करने का संकल्प दिलाया। इसके अतिरिक्त वहाँ के निकटवर्ती सिमडेगा नामक स्थान पर पर भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रोजैक्टर शो, प्रवचनों एवं गीतों का कार्यक्रम हुआ जो बहुत ही सफल रहा।

रायपुर में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी—रायपुर में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ के एक स्कूल में एक सप्ताह के लिये चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहाँ के कमिश्नर भ्राता राजेन्द्रपाल कपूर ने किया। इस प्रदर्शनी को हज़ारों लोगों ने देखा तथा इसे श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने का श्रेष्ठ साधन बताया। इसका विस्तृत समाचार "दैनिक नव भारत" में प्रकाशित हुआ तथा इस पत्र के सम्पादक तथा सह-सम्पादक भी क्लास में आते रहते हैं।

जलगाँव के निकटवर्ती ग्रामों में ज्ञान की गज-गोर—जलगाँव सेवा-केन्द्र की ओर से अनेक ग्रामों में आध्यात्मिक प्रवचनों एवं प्रोजैक्टर शो का आयोजन किया गया जिससे हज़ारों ग्रामवासियों ने परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया। इनमें से मडगाँव में आयोजित प्रदर्शनी से विशेष सेवा हुई तथा वहाँ के अनेक सम्मानित लोगों ने स्थाई सेवा-केन्द्र खोलने का अनुरोध किया।

बल्लभगढ़ में उप-सेवाकेन्द्र खुला—फरीदाबाद सेवा-केन्द्र की ओर से वल्लभगढ में त्रिदिवसीय आध्यात्मिक प्रदंशनी का आयोजन किया गया जिस को सभी वर्ग के हज़ारों लोगों ने देखा। इस अवसर पर आयोजित राजयोग शिविर से भी अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया तथा उनके अनुरोध पर वहाँ उप सेवा-केन्द्र खोला गया है जहाँ प्रतिदिन

२५-३० भाई-बहन ज्ञान-स्नान करने आते रहते हैं।

गोरखपुर में कैदियों की ईश्वरीय सेवा—गोरखपुर सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ की जेल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे लगभग ५०० कैदियों व जेल अधिकारियों ने लाभ उठाया। कैदियों से बुराइयाँ छोड़ने का संकल्प भी कराया। इसके अतिरिक्त ग्राम छितौनी तथा ऐयर फोर्स में आयोजित कार्यक्रम भी बड़े सफल रहे।

बरेली के ग्रामों एवं मन्दिरों में ज्ञान की शंख ध्वनि—बरेली सेवा-केन्द्र की ओर से शाहजानपुर में स्थित अर्डिनेन्स फैक्टरी के लक्ष्मी नारायण मन्दिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन फैक्टरी के जनरल मैनेजर ने किया। अनेकानेक लोगों ने इस प्रर्दशनी से लाभ उठाया। इसी प्रकार निकटवर्ती ग्रामों एवं स्कूलों में आयोजित प्रर्दशनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा। दस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत लोगों से बुराईयाँ छोड़ने का भी संकल्प कराया।

ब्रह्मपुर में १० सूत्री-कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रम—ब्रह्मपुर में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से स्थानीय जेल में कैदियों के लाभार्थ आध्यात्मिक प्रवचनों एवं प्रोजैक्टरशो का कार्यक्रम हुआ तथा उनसे बुराईयाँ छोड़ने का संकल्प कराया गया। इसी प्रकार विभिन्न ग्रामों व प्रसिद्ध स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों से भी हजारों लोगों ने लाभ उठाया जिनमें से भंजनगर, उदयगिरी, हार्उसिंग बोर्ड कालोनी, गुजराती महिला मण्डल, दासपुर ग्राम, उरहाग्राम व ब्रह्मपुर पोस्ट-आफिस का नाम उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त **रथ यात्रा** के अवसर पर आयोजित प्रर्दशनी से भी हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

मानसा (भटिण्डा) में विश्व-नव-निर्माण प्रदर्शनी—भटिण्डा सेवा-केन्द्र की ओर से मानसा मण्डी में एक सप्ताह के लिये आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिससे हजारों लोगों ने महात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया वहाँ के एस० डी० एम० तथा अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने सारे कार्यक्रम को देखा और इसकी बहुत प्रशंसा की। हज़ारों आत्माओं ने बुराईयाँ छोड़ कर दैवी गुण धारण करने का संकल्प लिया। इसी प्रकार १० सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत भटिण्डा की हरिजन कालोनी, स्कूलों व कालेजों तथा रोटरी क्लब में भी आध्यात्मिक प्रवचनों एवं प्रौजेक्टर शो का आयोजन किया गया जो बड़ा ही सफल रहा।

बडीपदा में रथ यात्रामहोत्सव – बडीपदा सेवकेन्द्र की ओर से जगन्नाथ रथ यात्रा महोत्सव' के अवसर पर त्रिदिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे हजारों प्रभु-भक्तों ने लाभ उठाया। दस-सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत अनेक लोगों ने बुराईयाँ छोड़कर दैवी गुण धारण करने का भी संकल्प लिया।

मंगलूर में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—मंगलूर में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रवचनों, प्रदर्शनी एवं प्रोजैक्टर शो का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया इनमें से युवक संघ, बिल्व समाज, काली मन्दिर, राम मन्दिर तथा कालेज एवं स्कूलों का नाम उल्लेखनीय है।

काठमण्डु (नेपाल) में दस-सूत्री कार्यक्रम—काठमण्डु में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से दस-सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचनों एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। सर्व प्रथम **'नेपाल सोवियत सांस्कृतिक संघ'** के हाल में एक सप्ताह की प्रदर्शनी लगाई गई जिसका उद्घाटन नेपाल के विकास सहायक मंत्री ने किया। इस प्रदर्शनी को अनेक डाक्टरों, वकील, जजों व सरकारी अधिकारियों के अतिरिक्त हज़ारों लोगों ने देखा और श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा ली।

समाप्ति समारोह में वहाँ के जल श्रोत विभाग की सहायक मंत्री बहन सरस्वती राई जी पधारी थीं जो बहुत ही प्रभावित होकर गई। इस अवसर पर उपस्थित जनता से बुराईयाँ छोड़कर दैवीगुण धारण करने का संकल्प भी कराया। इसी प्रकार 'भारत नेपाल सांस्कृतिक केन्द्र में आयोजित प्रदर्शनी भी बहुत सफल रही जिसका उद्‌घाटन राज्य सभा की स्थाई समिति के सदस्य भ्राता बालकृष्ण जी ने किया। नेपाल में भारतीय राजदूत, नेपाल के प्रधान न्यायाधीश व अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भी इस प्रदर्शनी को देखा और इसकी अत्यधिक प्रशंसा की।

फतेहाबाद में दस-सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत सेवा—फतेहाबाद में स्थित सेवा-केन्द्र के भाई-बहनों ने १०-सूत्री कार्य-क्रम को सफल बनाने हेतु जन-जन की सेवा का 'पवित्र और योगी' बनने का ईश्वरीय सन्देश दिया तथा उनसे बुराईयाँ छोड़कर दैवी गुण धारण करने का संकल्प कराया।

सिद्धपुर में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—सिद्धपुर सेवा-केन्द्र की ओर से जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी, राजयोग शिविर, प्रवचन, प्रोजैक्टर शो, स्नेह मिलन आदि का कार्यक्रम किया जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

अम्बाला में दस-सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत सेवा - अम्बाला सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ की हरिजन कालोनी, ग्वाल मण्डी, चमड़ा उद्योगशाला, तथा मलाना ग्राम में आध्यात्मिक प्रवचनों, प्रोजैक्टर शो तथा प्रदर्शनी का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक लोगों ने लाभ उठाया।

नासिक के श्मशान, अन्ध विद्यालय व जेल में कार्यक्रम—नासिक सेवा-केन्द्र की ओर से दस-सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सर्व प्रथम वहाँ के श्मशान घाट पर महाराष्ट्र के मंत्री वैंकट राव के निधन पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए जिसमें लगभग १५००० प्रतिष्ठित लोग उपस्थित थे। तत्पश्चात् वहाँ के अन्ध विद्यालय तथा रिमांड होम में जाकर बहनों ने शिव बाबा का सन्देश दिया। इसके अतिरिक्त वहाँ के अनेक ग्रामों एवं स्कूलों में भी प्रवचनों एवं प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया। अनेक आत्माओं से बुराईयाँ छोड़कर दैवी गुण धारण करने की प्रतिज्ञा भी कराई गई तथा एक प्रेस कान्फ्रेंस का भी आयोजन किया गया ताकि समाचार पत्रों द्वारा जन-जन को ईश्वरीय सन्देश व दस-सूत्री कार्यक्रम का समाचार पहुँचाया जा सके।

भावनगर में कैदियों एवं छात्रों को ईश्वरीय सन्देश—भावनगर सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ की डिस्ट्रिक्ट जेल में २०० कैदियों के समक्ष ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए तथा उनसे धूम्रपान, क्रोध व अन्य बुराईयाँ छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई गई। इसी प्रकार वहाँ के विभिन्न स्कूलों एवं कालेजों में प्रवचनों व प्रोजैक्टर शो द्वारा उन्हें 'चरित्र निर्माण' एवं 'अनुशासन' में रहने की शिक्षा दी। इसके अतिरिक्त विभिन्न मन्दिरों एवं ग्रामों में भी आयोजित कार्यक्रम बहुत ही सफल रहे।

ढेन्कानाल में विभिन्न कार्यक्रम—जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु ढ़ेन्कानाल सेवा केन्द्र की ओर से विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचनों, राजयोग शिविर एवं प्रोजैक्टर शो का आयोजन किया जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया। इनमें से बिजीगोल ग्राम, रंजागोला ग्राम, हिण्डोल व गवर्नमेन्ट गर्ल्स हाई स्कूल आदि का नाम उल्लेखनीय है।

गाजियाबाद सेवा-केन्द्र द्वारा हरिजनों एवं कुष्ठ रोगियों की सेवा—दस-सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत गाजियाबाद सेवा-केन्द्र द्वारा हरिजनों एवं कुष्ठ रोगियों के लाभार्थ दो स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसका उद्‌घाटन सरकारी हस्पताल के सिविल सर्जन डा मेहता ने किया।

इस प्रदर्शनी को हज़ारों लोगों ने देखा और सच्ची शान्ति का अनुभव किया।

झांसी में ज्ञान यज्ञ में विकारों की आहुति डलवाई गई— झाँसी सेवा-केन्द्र की ओर से तालवेट में एक महात्मा द्वारा रचे गये यज्ञ के पास ही दो दिनों के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया तथा अनेक श्रद्धालु भक्तों से विकारों को छोड़ने का संकल्प कराया। इसके अतिरिक्त हरिजन बस्ती में आयोजित प्रदर्शनी भी बहुत सफल रही।

पाली में विकलांग व हरिजनों की सेवा—पाली सेवा-केन्द्र की ओर से विकलांग एवं हरिजनों के लाभार्थ आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक आत्माओं ने परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय पाया तथा बुराईयों का दान दिया। इसके अतिरिक्त बस स्टैण्ड पर भी दो दिन की प्रदर्शनी लगाई गई जिससे हज़ारों लोगों ने लाभ उठाया।

अमृतसर में कुष्ठ रोगियों एवं नयन-हीनों की सेवा—दस-सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत अमृतसर सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ के कुष्ठआश्रम में ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए जिससे लगभग २०० रोगियों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त अन्ध विद्यालय तथा जेल में भी आध्यात्मिक प्रवचनों का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा। जेल में लगभग ५०० कैदियों को राजयोग फिल्म भी दिखाई तथा उनसे बुराईयाँ छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई।

सिरोहा में द्वितीय वार्षिकोत्सव—सिरोही सेवा-केन्द्र के द्वितीय वार्षिकोत्सव के उपलक्ष में वहाँ की एक प्रमुख लायब्रेरी के हाल में आध्यात्मिक प्रवचनों, गीतों, कविताओं एवं शिक्षाप्रद नाटक का कार्यक्रम हुआ जिसमें सिरोही के उप जिलाधीश मुख्य अतिथी के रूप में पधारे थे। आदरणीया दीदी जी भी मधुवन से ५०-६० भाई बहनों साहित पधारी थीं। इस कार्यक्रम से अनेकानेक लोगों ने लाभ उठाया तथा कई जिज्ञासु सेवा केन्द्र पर भी आ रहे हैं।

हिसार की बाल-सुधार जेल में कार्यक्रम— हिसार सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ की बाल-सुधार जेल में आध्यात्मिक प्रवचनों एवं प्रोजैक्टर शो का आयोजन किया गया तथा बच्चों से बुराईयाँ छोड़-कर दैवीगुण धारण करने का संकल्प कराया।

मेरठ के अनाथालय में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रोजैक्टर शो—दस-सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत मेरठ सेवा-केन्द्र की ओर से वैश्य अनाथालय में प्रदर्शनी एवं प्रोजैक्टर शो का आयोजन किया गया जिससे सभी बच्चों व वहाँ के अधिकारियों ने लाभ उठाया।

ऊंझा के यूथ क्लब तथा हरिजन कालोनी में कार्यक्रम—ऊंझा सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ के नेशनल युथ क्लब एवं हरिजन कालोनी में आध्यात्मिक प्रवचनों एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक लोगों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त निकटवर्ती ग्रामों में आयोजित कार्यक्रम भी बड़ा सफल रहा।

मुजफ्फरनगर में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—मुजफ्फरनगर सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ के प्रसिद्ध तीर्थ 'शुक्रताल' तथा 'उद्योग प्रदर्शनी' में विशाल पण्डाल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिससे हज़ारों लोगों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त वहाँ के रोटरी क्लब में भी ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए।

जयपुर में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम— जयपुर (राजापार्क) सेवा-केन्द्र की ओर से परदादी निर्मलशान्ता जी तथा रमेश भाई के विदेश यात्रा से लौटने पर वहाँ के लायन्स क्लब में स्वागत समारोह का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे जो परदादी जी के अनुभव सुनकर बहुत प्रभावित हुए, इस अवसर पर आयोजित प्रैस कान्फ्रेस भी बहुत सफल रही तथा 'राजस्थान पत्रिका', अमर राजस्थान अधिकार, अणिमा, कूक, आदि समाचार पत्रों में विस्तृत समा-

चार प्रकाशित किया।

बम्बई (विलेपार्ले) में नया सेवा-केन्द्र खुला—(बम्बई) विलेपार्ले की जनता को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु वहाँ नवीन सेवा-केन्द्र खोला गया है। ब्रह्माकुमारी निर्मलशान्ता जी ने विदेश यात्रा से लौटने पर वहाँ पर आयोजित स्नेह मिलन के कार्यक्रम में अपना अनुभव सुनाया जिससे उपस्थित लोग बहुत प्रभावित हुए। इसके अतिरिक्त 'सिटी स्पोर्ट्स ऐसोसियेशन' में आयोजित कार्यक्रम तथा 'बाल व्यक्त्व स्पर्धा' का आयोजन भी सफल रहा।

राजकोट में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—राजकोट सेवा-केन्द्र की ओर से कस्तुरबा धाम में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया। जिसके परिणाम स्वरूप कई नये जिज्ञासु सेवा-केन्द्र पर आते रहते हैं। वहाँ की सैन्ट्रल जेल में भी कैदियों के लाभार्थ आध्यात्मिक कार्यक्रम हुआ तथा मोरवी में बाढ़ पीड़ित लोगों को ईश्वरीय सन्देश दिया तथा पिछले वर्ष की बाढ़ के कारण जो हज़ारों आत्माओं ने शरीर छोड़ा था उनको शान्ति का दान देने अर्थ आयोजित 'सर्व धर्म सम्मेलन' में ब्रह्माकुमारी बहनों के भी प्रवचन हुए।

सांगानेर में जन-जन को ईश्वरीय सन्देश—दस-सूत्री कार्य-क्रम के अन्तर्गत भीलवाड़ा सेवा-केन्द्र की ओर से सांगानेर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी, राजयोग शिविर तथा प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे हज़ारों आत्माओं ने लाभ उठाया।

बुरहानपुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी—बुरहानपुर सेवा-केन्द्र की ओर से जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन स्टेट बैंक के मैनेजर ने किया इस प्रदर्शनी को अनेक मुसलमानों ने भी देखा और लाभ उठाया।

नागपुर में राजयोग प्रदर्शनी एवं योग शिविर—नागपुर सेवा-केन्द्र की ओर से यवतमाल शहर में राजयोग प्रदर्शनो एवं योग शिविर का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहाँ के सिविल सर्जन ने किया। अनेकानेक आत्माओं ने परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया।

धुलिया में राजयोग प्रदर्शनी एवं योग शिविर—धुलिया सेवा-केन्द्र की ओर से मउगाँव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं योग शिविर का आयोजन किया गया जिसका विस्तृत समाचार स्थानीय समाचार पत्र "आपका महाराष्ट्र" में प्रकाशित हुआ। अनेकानेक लोगों ने इससे लाभ उठाया।

कानपुर में जेल में कार्यक्रम—कानपुर सेवा-केन्द्र की ओर से जिला कारागार में लगभग १२०० कैदियों के समक्ष ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए तथा उन्हें अच्छे नागरिक बनने की शिक्षा दी गई। बहनों ने राखी बाँधकर उनसे अच्छे नागरिक बनने की प्रतिज्ञा कराई। सार्वजनिक प्रवचनों का कार्यक्रम भी बड़ा सफल रहा।

पोरबन्दर में विभिन्न कार्यक्रम—पोरबन्दर सेवा-केन्द्र की ओर से सत्यनारायण मन्दिर, कन्या पाठशाला तथा बिरला कालोनी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी व प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक लोगों ने लाभ उठाया।

पटना में नेत्रहीनों को ज्ञान-नेत्र दान—पटना सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ के राजकीय उच्च नेत्रहीन-विद्यालय में आध्यात्मिक प्रवचन, गीतों एवं योग शिविर का कार्यक्रम हुआ जिससे उन्हें ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया गया। वहाँ के 'विश्व-बन्धु', आत्मकथा तथा 'तूफान' अदि समाचार पत्रों में इसका विस्तृत समाचार प्रकाशित हुआ।

गुरुदासपुर में विभिन्न कार्यक्रम—गुरुदासपुर सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ के कुष्ठाश्रम, हरिजन बस्ती तथा जेल में आध्यात्मिक प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिसमें उन्हें परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया तथा सच्ची सुख-शान्ति की प्राप्ति का सहज मार्ग बताया गया। समाचारपत्रों में भी समाचार प्रकाशित हुआ। [शेष पृष्ठ ३३ पर]

की विदेश यात्रा

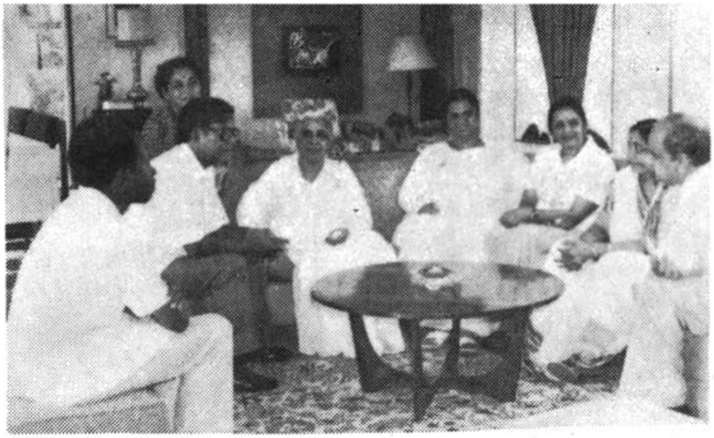

ग्याना में स्थित भारत के हाई कमिश्नर तथा उनकी धर्मपत्नी को दादी निर्मल शान्ता जी ईश्वरीय सन्देश दे रही हैं। साथ में ब्र० कु०रमेश, पुष्पा जी, ब्र० कु० मोहिनी जी व अन्य बहन-भाई बैठे हैं।

मोरिशस में आयोजित 'आध्यात्मिक सम्मेलन' का उद्घाटन दादी निर्मल शान्ता जी दीप जलाकर कर रही हैं। वहां के वाणिज्य व उद्योगमन्त्री भ्राता बसन्तराय, ब्र० कु०चन्द्रा एवं सोम प्रभा जी उनकें साथ खड़े हैं।

दादी निर्मलशान्ता जी के केन्या (साऊथ अफ्रीका) में पधारने पर वे वहां के राष्ट्रपति भ्राता डेनिवल अरायमोप को ईश्वरीय सन्देश दे रही हैं। साथ में वहां के बहन-भाई खड़े हैं।

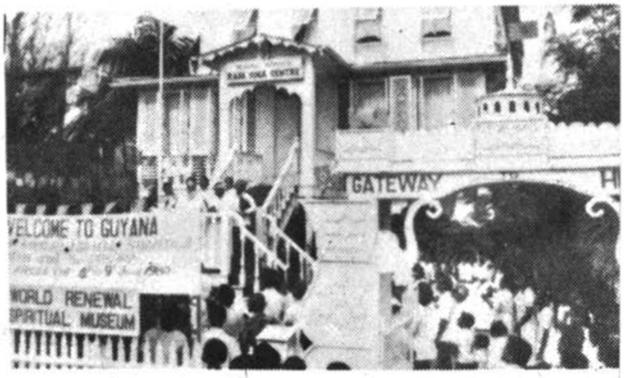

दादी निर्मलशान्ता जी ग्याना (साऊथ अमेरिका) के राजयोग सेवा केन्द्र (पीस पैलेस) पर 'शिव बाबा' का झण्डा लहरा रही हैं। इस अवसर पर एकत्रित विशाल जन-समूह दिखाई दे रहा है।

ग्याना मे आयोजित आध्यात्मिक सम्मेलन में वहां के आवास मन्त्री भ्राता स्टीव नारायण अपने विचार प्रकट कर रहे हैं। मंच पर बिशप जार्ज, दादी निर्मलशान्ता जी, मोहिनी जी तथा कृषि मन्त्री व बहन मॉसेल आदि बैठे हैं।

दादी निर्मल शान्ता जी ग्याना के प्रधानमन्त्री को ईश्वरीय सन्देश सुना रही हैं। साथ में ब्र० कु० मोहिनी जी, पुष्पा जी तथा रमेश भाई खडे हैं।

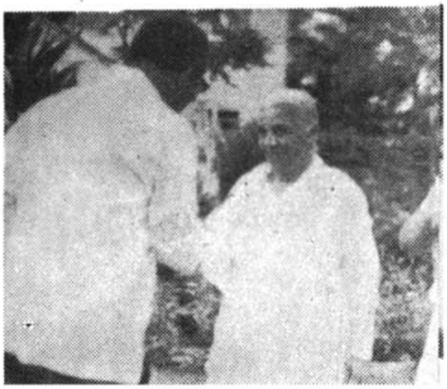

ओलंपिया (लण्डन) में आयोजित, 'माईण्ड, बॉडी व स्पिरिट उत्सव में आयोजित प्रदर्शनी को एक ग्रुप बड़े ध्यानपूर्वक देख रहा है ।

लन्डन सेवा केन्द्र द्वारा निकाली गई झाँकियां एवं शान्ति यात्रा का एक दृश्य । वहाँ के प्रसिद्ध हैडल पार्क के निकट से गुजरती हुई शान्ति यात्रा का एक भाग दिखाई दे रहा है ।

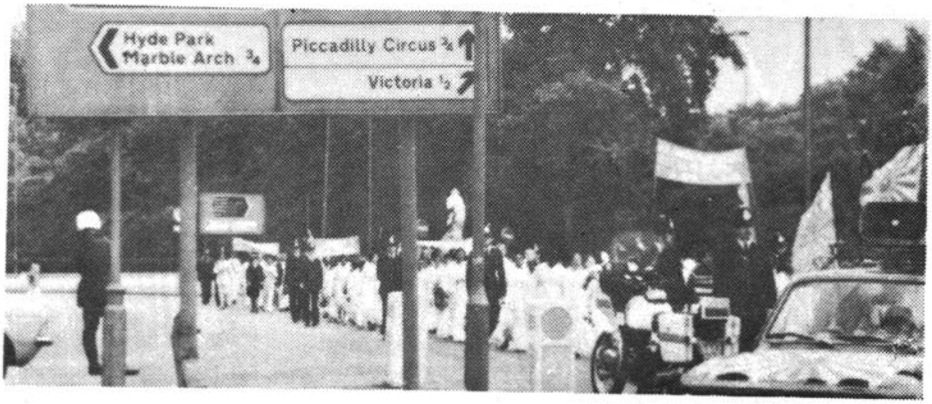

लण्डन के प्रमुख मार्गों से शान्ति यात्रा एवं झांकियां निकाली गई थीं हंस की झांकी वहां के प्रमुख 'हैडल पार्क के निकट से गुजरती हुई दिखाई दे रही है ।

लन्दन के 'चैलसी टाउन हाल' में आयोजित आध्यात्मिक सम्मेलन' में भारतीय हाई कमिश्नर डा० आई० पी० सिंह प्रवचन कर रहे हैं । मंच पर ब्र०कु० एडन, ब्र० कु०सुदेश तथा कर्नल हंस रावल बैठे हैं ।

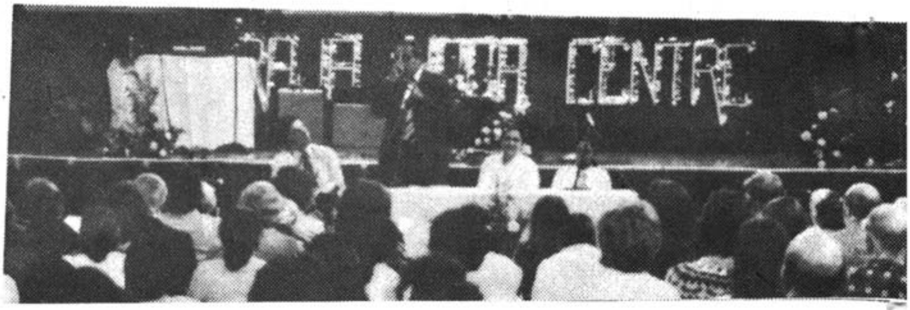

जर्मनी (फ्रैंकफर्ट) के प्रमुख भागों से शान्ति यात्रा तथा झांकियां निकाली गई थीं। चित्र में घोड़ागाड़ी पर ब्रह्माकुमारी बहनें बैठी हैं तथा आगे-आगे शान्ति यात्रा में भाग लेने वाले बहन-भाई जा रहे हैं।

वाराणसी में औसानगंज स्टेट के भूतपूर्व महाराजा त्रिविक्रम नारायण सिंह को ब्र० कु० परनीता राखी बाँध रही हैं।

बगलकोट में ब्र० कु० नीलु कर्नाटक के भूतपूर्व एक्साइज एवं ट्रांसपोर्ट मन्त्री भ्रातर आर० एस० पाटिल को राखी बांध रही हैं।

फ्रैंकफर्ट (जर्मनी) में निकाली गई शोभा यात्रा का एक दृश्य। कुछ बहन-भाई चार घोड़ों की सजी हुई गाड़ी में बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं।

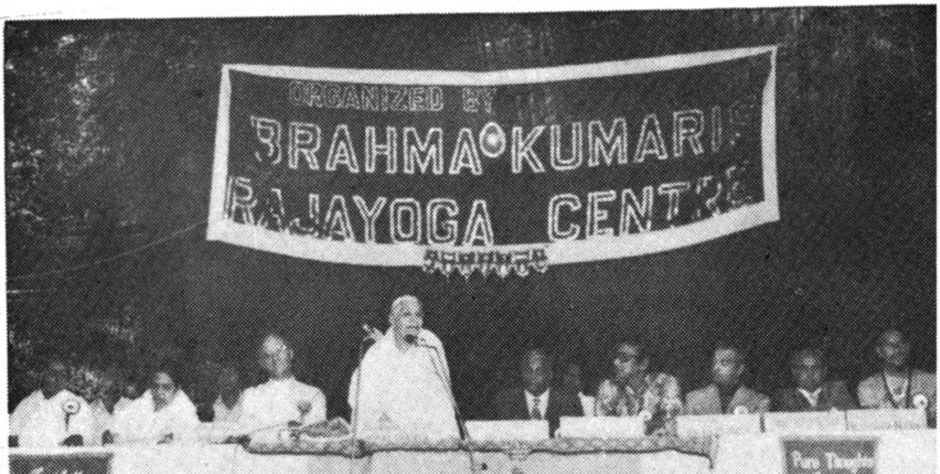

मोरीशस (अफ्रीका) में आयोजित आध्यात्मिक सम्मेलन में ब्र० कु० निर्मलशान्ता जी प्रवचन कर रही हैं। मंच पर वहाँ के उद्योग व वाणिज्य मन्त्री, मेयर तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति बैठे हैं।

श्री अरविंद आश्रम दिल्ली शाखा के अध्यक्ष भ्राता छेदीलाल को राखी बांधने के पश्चात ब्र० कु० शील अन्य अधिकारियों को राखी बांध रही हैं।

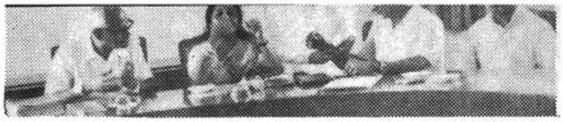

कलकत्ता में आयोजित समारोह में ब्रह्म-समाज के प्रधान, गुजराती समाज के प्रधान, कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर के० चटर्जी ब्र० कु० निर्मल शान्ता जी व बिन्दु मंच पर बैठे हैं। भ्राता रमेश जी प्रवचन कर रहे हैं।

नई दिल्ली की 'सोसाइटी आफ़ जीसस' संस्था के प्रमुख फादर टी० के० जैन को राखी बांधने के पश्चात् पहाड़गंज सेवा केन्द्र के भाई-बहन उनके साथ खडे हैं।

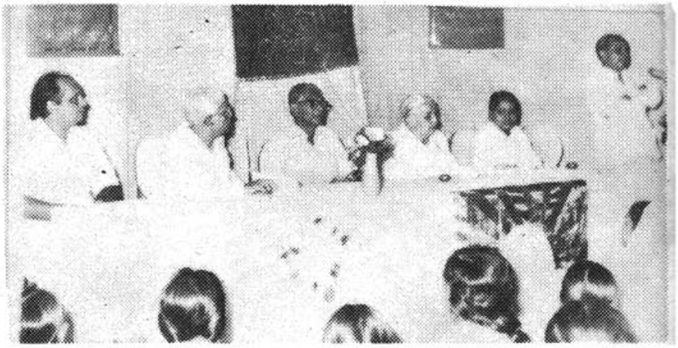

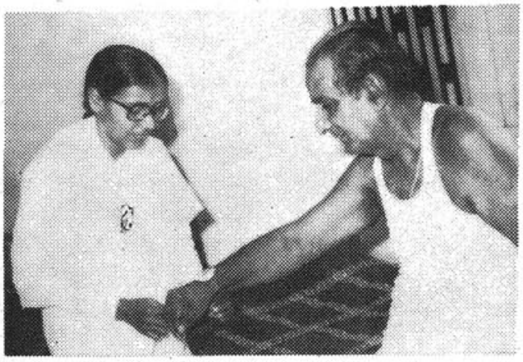

← मेहसाना में एज्यूकेशन ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी भ्राता वासुदेव जी को सरला बहन राखी बाँध रही हैं।

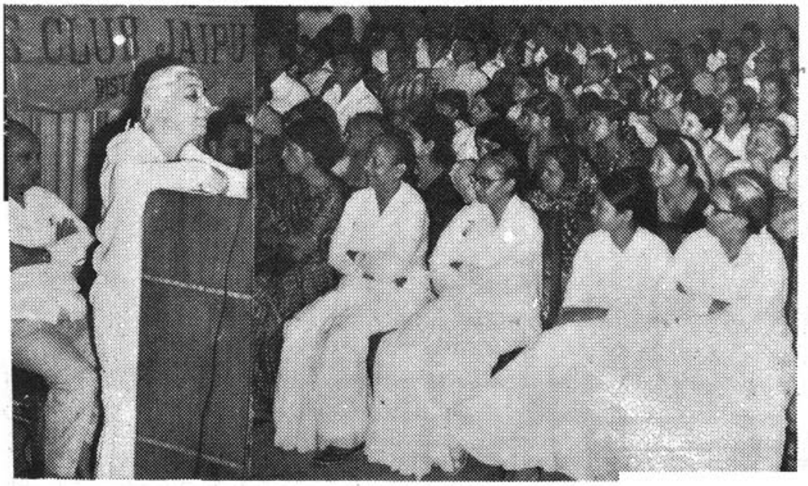

जयपुर के लायन्स क्लब द्वारा विदेश यात्रा से लौटने पर ब्र० कु० निर्मलशांता जी का स्वागत किया गया था। चित्र में दादी जी अपने विदेश के संस्मरण सुना रही हैं, साथ में रमेश भाई बैठे हैं।

भीलवाड़ा में रामस्नेही संस्था के मठाधीश स्वामी रामकिशोर को ब्र० कु० बहनें राखी बांध रही हैं। ↓

हिसार के निकटवर्ती ग्रामों में ज्ञान की गजगोर—हिसार सेवा-केन्द्र द्वारा बरवाला ग्राम तथा केसरी ग्राम में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक ग्रामवासियों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त हिसार के अन्ध विद्यालय में भी बहनों के प्रवचन हुए।

गाँधी नगर (गुजरात) में अपंगों की सेवा—'अपंगमानव समाज' द्वारा गाँधी नगर में त्रिदिवसीय 'ज्ञान शिविर' का आयोजन किया गया था जिसका उद्घाटन वहाँ के उप-शिक्षा मंत्री ने किया तथा लेबर वैलफेयर विभाग के सचिव मुख्य अतिथी थे। ब्रह्मा-कुमारी बहनों के भी प्रवचन हुए जिसके द्वारा उन्हें सच्ची सुख-शान्ति की प्राप्ति का सहज मार्ग दर्शाया गया।

रक्षा बन्धन पर विभिन्न सेवा-केन्द्रों द्वारा की गई ईश्वरीय सेवा।

बटाला—सेवा-केन्द्र की ओर से शहर के प्रमुख व्यक्तियों को पवित्रता की सूचक राखी बाँधी गई तथा सार्वजनिक प्रवचनों, गीतों का कार्यक्रम हुआ।

उदयपुर—सेवा-केन्द्र की ओर से ५०० कैदियों से ब्रह्माकुमारी बहनों ने राखी का आध्यात्मिक महत्त्व बताते हुए बुराईयाँ छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई। बहनों ने वहाँ के डिस्ट्रिक सेशन जज, अतिरिक्त जिलाधीश, प्रिंसिपल मेडिकल कालेज, दैनिक 'उदयपुर एक्सप्रैस' तथा 'जय राजस्थान' समाचार पत्रों के सम्पादक तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों को राखी बाँधी तथा "पवित्र और योगी" बनने का ईश्वरीय सन्देश दिया।

ग्वालियर—सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ के जिलाधीश, वाईस चांसलर, डी० आई० जी०, नगर प्रशासक, हाईकोर्ट के जज तथा मेम्बर पार्लियामेन्ट आदि को पवित्रता की सूचक राखी बाँधी गई तथा सार्वजनिक प्रवचनों द्वारा इस पावन पर्व का आध्यात्मिक महत्त्व आम जनता को बताया गया।

भरतपुर—सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ अंध-विद्यालय में रक्षा-बन्धन का शुभ सन्देश दिया गया तथा उनसे बुराईयाँ छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई। इसके अतिरिक्त वहाँ के जिलाधीश, जिला व सत्र-न्यायधीश, पुलिस अधीक्षक, नगर परिषद के प्रशासक, स्टेशन मास्टर आदि को राखी बाँधी तथा पवित्र और योगी बनने का ईश्वरीय सन्देश दिया।

कोटा—सेवा-केन्द्र की ओर से शहर के प्रमुख व्यक्तियों को राखी बाँधी तथा बुराईयाँ छोड़ने के फार्म भरायें गये। सेवा-केन्द्र पर आयोजित स्नेह-मिलन के कार्यक्रम में भी अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया।

बम्बई (गामदेवी)—सेवा-केन्द्र की ओर से 'दैवी जीवन में पवित्रता का स्थान' विषय पर न्यायधीशों का परिसंवाद रखा गया था जिससे सैकड़ों विशेष लोगों ने लाभ उठाया जिसमें जज, वकील, लायन्स क्लब के प्रेजीडैन्ट आदि सम्मिलित थे। सार्वजनिक प्रवचनों के कार्यक्रम द्वारा आम लोगों को इस पावन पर्व का महत्त्व बताया गया तथा विशिष्ठ व्यक्तियों को बहनों ने राखी बाँधी जिसमें से महाराष्ट्र के राज्यपाल भ्राता सादिक अली, मुख्य मंत्री भ्राता ए० आर० अन्तुले, वित्त मंत्री भ्राता रामराव आदिक, आवास मंत्री भ्राता चन्द्रकान्त त्रिपाठी, समाज कल्याण विभाग की मंत्री बहन प्रमीला याज्ञनिक, सहकारी मंत्री भ्राता एस० एन० देसाई, हाई कोर्ट के जज, उप-कुलपति, रेडियो, टी० वी० तथा फिलम डिविजन के डायरेक्टरों आदि अनेक सरकारी अधिकारियों का नाम उल्लेखनीय है इस प्रकार लगभग ८० विशिष्ठ लोगों को राखी बाँधी तथा पवित्र और योगी बनने का ईश्वरीय सन्देश दिया।

वाराणसी—में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से केन्द्रीय कारागार में रक्षा बंधन महोत्सव मनाया गया जिससे लगभग ६५० कैदियों ने लाभ उठाया। रक्षा-बन्धन का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए बहनों ने उन्हें राखी बाँधी तथा बुराईयाँ छोड़ने की प्रतिज्ञा

कराई। इसके अतिरिक्त हर वर्ग के विशिष्ठ व्यक्तियों को पवित्रता की सूचक राखी बाँधी गई जिनमें से स्वामी करपात्री जी महाराज, काशीविद्वत परिषद के अध्यक्ष पं० निरीक्षणपति मिश्र, काशीपीठ के शंकराचार्य स्वामी शंकरानन्द सरस्वती, सम्पूर्णा नन्द संस्कृत विश्व-विद्यालय के कुलपति आचार्य बद्रीनाथ शुक्ल, काशी विद्यापीठ के उप-कुलपति आचार्य आर० बी० सक्सैना; आचार्य पं० विश्व नाथ प्रसाद मिश्र (साहित्यकार); पद्मविभूषित शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ; पद्मश्री पं० किशनजी महाराज भूत पूर्व नरेश भ्राता विक्रम नारायणसिंह तथा स्थानीय समाचार पत्रों के सम्पादक आदि का नाम उल्लेनीय है।

अम्बाला—सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ आयुक्त व अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों को पवित्रता की सूचक राखी बाँधी गई तथा उन्हें दस-सूत्री कार्य-क्रम की रूपरेखा व विश्व परिवर्तन में इसका महत्त्व बताया गया।

पूना—सेवा-केन्द्र की ओर से पेटवड़ा सैन्ट्रल जेल में लगभग ६० कैदियों को राखी बाँधी गई तथा उनसे बुराईयाँ छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई गई। इसी रिमांड होम के बच्चों की सेवा की गई तथा आम जनता के लिये इस पावन पर्व के 'आध्यात्मिक महत्त्व' पर सार्वजनिक प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिसमें वहाँ के मेयर मुख्य अतिथी के रूप में पधारे थे। आकाश वाणी ने राखी के कार्यक्रम का प्रसारण किया तथा समाचार पत्रों ने विस्तृत समाचार प्रकाशित किया।

लखनऊ—सेवा-केन्द्रों द्वारा निकटवर्ती ग्रामों में आध्यात्मिक प्रवचनों, प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया तथा १०० आत्माओं को राखी बाँधते हुए बुराईयाँ छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई। कई स्कूलों में भी 'राखी का महत्त्व' पर प्रवचन हुए और शिक्षकों को बहनों ने राखी बाँधी तथा पवित्र और योगी बनने का ईश्वरीय सन्देश देते हुए प्रमुख व्यक्तियों को राखी बाँधी।

मथुरा—सेवा-केन्द्र की ओर से 'राखी का आध्यात्मिक रहस्य' पर स्थानीय समाचार पत्रों में लेख प्रकाशित कराया गया जिससे आम जनता को इस पावन पर्व का महत्त्व बताया गया तथा विशिष्ठ लोगों को राखी बाँधी गई और 'पवित्र' तथा 'योगी' बनने का ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

तेजपुर, गोहाटी व तिनसुकिया—सेवा-केन्द्रों पर भी राखी का पर्व बड़ी धूम-धाम से मनाया गया तथा स्थानीय समाचार पत्रों में इस पर्व से सम्बन्धित लेख प्रकाशित हुए। अनेक लोगों से बुराईयाँ छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई गई तथा विशिष्ठ लोगों को बहनों ने राखी बाँधी।

भावनगर—सेवा-केन्द्रों की ओर से वहाँ की सामाजिक संस्थाओं के प्रमुख लोगों को राखी बाँधी गई जिसमें से राजकीय बस डिपो, वृद्धाश्रम, बालाश्रम, संरक्षणगृह, अंध विद्यालय आदि का नाम उल्लेखनीय है। विभिन्न विद्यालयों तथा मन्दिरों में भी ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए।

कटक—सेवा-केन्द्र की ओर से सार्वजनिक प्रवचनों एवं गीतों का कार्यक्रम हुआ जिसमें 'राखी' का आध्यात्मिक महत्त्व बताया गया। वहाँ के प्रमुख व्यक्तियों को राखी बाँधी गई तथा 'पवित्र और योगी' बनने का ईश्वरीय सन्देश दिया गया जिनमें से उड़ीसा के शिक्षा मंत्री, कृषि मंत्री, मुख्य मंत्री, वित्त मंत्री, कलक्टर, आई० जी० पुलिस आदि मुख्य हैं।

नैनीताल—सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ के कारागार में २०० कैदियों से इस पावन पर्व का महत्त्व बताते हुए बुराईयाँ छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई गई। इसके अतिरिक्त जिलाधीश मुख्य चिकित्सा अधिकारी, जिला व सैशन जज एम० एल० ए० व अन्य प्रमुख व्यक्तितों को बहनों ने राखी बाँधी तथा 'पवित्र और योगी' बनने का ईश्वरीय सन्देश दिया।

दिल्ली तथा नई दिल्ली में स्थित सेवा केन्द्रों द्वारा रक्षा-बंधन समारोह।

पाण्डव भवन नई दिल्ली—में स्थित केन्द्र द्वारा भारत के राष्ट्रपति भ्राता नीलम संजीवैया रेड्डी, सूचना प्रसारण मंत्री भ्राता बसन्त साठे, कृषि मंत्री राव विरेन्द्रसिंह, शिक्षामंत्री भ्राता शंकरानन्द, राज्यसभा के डिप्टी चेयरमैन भ्राता श्यामलाल यादव, शिक्षा सचिव भ्राता पी० सुब्रमण्यम, विधि सचिव वेंकैटा सुब्रमण्यम, पर्यटन विभाग के सचिव भ्राता वेंकैटारमन, आवास मंत्रालय के सचिव भ्राता एम० के० मुकर्जी आदि को पवित्रता की सूचक राखी बाँधी और ईश्वरीय सन्देश दिया गया। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रान्तों से चुनकर आये हुए मैम्बरस पार्लियामेन्ट की विशेष सेवा की गई तथा उन्हें पाण्डव भवन में आने का निमन्त्रण दिया जिसके परिणाम स्वरूप ३४ मैम्बर पार्लियामेन्ट सेवाकेन्द्र पर पधारे और बहुत प्रभावित होकर गये।

शक्तिनगर (कमलानगर)—सेवाकेन्द्र की ओर से दिल्ली प्रशासन की कालोनी गुलाबी बाग में त्रिदिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसे हज़ारों लोगों ने देखा और "पवित्र और योगी" बनने का ईश्वरीय सन्देश प्राप्त किया। वहाँ की जनता के अनुरोध पर 'सच्ची गीता पाठशाला' खोली गई हैं। निकटवर्ती किंग्सवे कैम्प में स्थित 'पूअर हाउस' (Poor House) तथा 'बालरिमाण्ड होम' में भी आध्यात्मिक प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ। इसके अतिरिक्त उर्दू के दैनिक व साप्ताहिक समाचार पत्रों की विशेष सेवा की गई जिनमें से दैनिक प्रताप, मिलाप, तेज, सवेरा, दावत, अलजिमियत, तेज गाय का नाम उल्लेखनीय है। प्रमुख व्यक्तियों को राखी भी बाँधी गई जिनमें से प्रधानमंत्री श्रीमती इन्द्रा-गाँधी, गृहमंत्री भ्राता जैलसिंह, उप-राज्यपाल भ्राता जगमोहन, नगर निगम कमिश्नर भ्राता जे० एन० सिंह, सूचना एवं प्रसारन विभाग के सचिव भ्राता ए० के० दत्त तथा दिल्ली-विश्व-विद्यालय के उप कुलपति भ्राता गुरुबक्श सिंह का नाम उल्लेखनीय है।

चाँदनी चौक तथा खारी बावली—में स्थित सेवाकेन्द्रों की ओर से हाईकोर्ट सुप्रीम कोर्ट के अनेक जजों को ईश्वरीय सन्देश दिया गया तथा 'पवित्रता की सूचक' राखी बाँधी गई। इनमें से जस्टिस पी० एन० भगवती, जस्टिस एस० मूर्तजा फैजल अली, जस्टिस आर०.एस० सरकारिया, जस्टिस ए० पी० सैन, का नाम उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त सनातन धर्म रामलीला कमेटी के अध्यक्ष तथा दिल्ली फूडग्रेन एण्ड आयल सीड्स एसोसिएशन के अध्यक्ष भ्राता लक्ष्मी नारायण पोद्दार को भी राखी बाँधी तथा सेवा केन्द्र पर पधारने का निमन्त्रण दिया।

साऊथ एक्सटैन्शन—में स्थित आध्यात्मिक संग्रहालय द्वारा भारत के उपराष्ट्रपति भ्राता हिदायतुल्ला जी, नेपाल के राजदूत भ्राता वेदानन्द झा, भूटान के राजदूत भ्राता संग्ये पंजूर जी, मोरिशस के हाई कमिश्नर भ्राता राज मोहन सिंह, केन्द्रीय मंत्री भ्राता सीताराम केसरी, रेलवे बोर्ड के मैम्बर भ्राता एम० मैन्जिज आदि को पवित्रता की सूचक राखी बाँधी गई। सेवा केन्द्र पर आयोजित सार्वजनिक प्रवचनों का कार्यक्रम भी बड़ा ही सफल रहा जिसमें कई मैम्बर पार्लिया मेंन्ट व अन्य विशिष्ठ व्यक्तियों ने भाग लिया तथा सहर्ष बहनों से राखी बंधवाई।

पटेल नगर—में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से विभिन्न समाचार पत्रों के सम्पादक, संवाददाताओं तथा उद्योग पतियों को पवित्रता की सूचक राखी बाँधी गई जिनमें से 'इण्डियन ऐक्सप्रैस' के संपादक भ्राता कुलदीप नैयर, 'हिन्दी हिन्दुस्तान' के सम्पादक भ्राता विनोद मिश्रा, 'नवभारत टाइम्स' के समाचार सम्पादक भ्राता पी० डी० जैन, भ्राता के० एल० भाटिया (लैण्ड कमिश्नर), संसद सदस्य भ्राता धर्मदास शास्त्री, बाणिज्य मंत्री भ्राता परनव मुकर्जी, आदि का नाम उल्लेखनीय है। सेवा-केन्द्र पर आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रम से अनेक लोगों

ने लाभ उठाया।

पहाड़गंज—सेवा-केन्द्र की ओर से दिल्ली के प्रमुख धार्मिक नेताओं को राखी बाँधी गई जिनमें से 'विद्या ज्योति संस्थान' के प्रमुख भ्राता टी० के० जोन, अरविन्द आश्रम के चेयरमैन भ्राता छेदीलाल, 'चर्च ऑफ नार्थ इण्डिया' के बिश्प भ्राता नासिर, महाबोध सोसाईटी के सचिव भ्राता आर्य वंश महाथेरो, निजाम्मुद्दीन दरगाह के पीर जामिन निजामी, न्यू वर्ल्ड सैन्टर के स्वामी पूर्णानन्द आदि का नाम उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के डायरेक्टरस तथा डिप्टी डायरेक्टर जनरल आदि को भी राखी बाँधी तथा ईश्वरीय सन्देश दिया।

मालवीय नगर—सेवा-केन्द्र की ओर से दिल्ली हाईकोर्ट के जज भ्राता एच० एल० आनन्द तथा डी० ए० देसाई, लॉ कमिशन के भूतपूर्व चेयर मैन जस्टिस एच० आर० खन्ना, प्रैस कमिशन के भूतपूर्व चेयर मैन जस्टिस पी० के० गोस्वामी, 'मोर्निंगस्टार' के सम्पादक भ्राता राघवन, अवकाश प्राप्त जस्टिस जसवन्तसिंह, जस्टिस टाटाचारी, जस्टिस मिश्रा तथा अन्य विशिष्ठ व्यक्तियों को राखी बाँधी गई।

पालम—में स्थित सेवा-द्वारा मुख्य सेना अधिकारियों को राखी बाँधी गई जिसमें से मेजर रामचन्द्रन, मेजर जनरल राव, मेजर जनरल आहुआ की धर्म पत्नी, मेजर मनमोहनसिंह, मेजर ईश्वरसिंह, मेजर के० वी० सेठी, ब्रिगेडियरस तथा कैप्टन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। सेवा-केन्द्र पर आयोजित समारोह भी बड़ा ही सफल रहा। इसके अतिरिक्त उच्चतर माध्यमिक कन्या एवं बाल विद्यालय में भी बहनों के प्रवचन हुए। सात मिलिटरी यूनिटों में भी बहनों के प्रवचन हुए जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

इसी प्रकार कश्मीरी गेट, राजारी गार्डन, कृष्णानगर, शाहदरा, जनकपुरी, ग्रीनपार्क आदि-२ सेवाकेन्द्रों द्वारा भी राखी का पर्व धूम-धाम से मनाया गया तथा अनेकानेक आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया।

बम्बई (कोलाबा)—सेवा-केन्द्र द्वारा लगभग ७० विशिष्ठ व्यक्तियों को राखी बाँधी जिनमें से मिनिस्टर, सरकारी अधिकारी, बैंक मैनेजर, गीतकार, मिलिटरी के आफिसर आदि का नाम उल्लेखनीय है। कई मिलिटरी के मन्दिरों में भी बहनों के प्रवचन हुए जिससे हजारों जवानों तथा आफिसरस ने लाभ उठाया।

कानपुर (किदवई नगर)—सेवा-केन्द्र की ओर से समाचार पत्रों की विशेष सेवा की गई जिनमें से 'जागरण', 'दैनिक आज', 'विश्वमित्र', 'गणेश' का नाम उल्लेखनीय है। इन समाचार पत्रों में राखी से सम्बन्धित लेख भी प्रकाशित हुए हैं। विशिष्ठ व्यक्तियों को राखी भी बाँधी गई जिनमें से भ्राता रामनारायण (मैम्बर पार्लियामैन्ट), ज्येष्ठ पुलिस अधीक्षक भ्राता बलवीरसिंह बेदी, जिलाधिकारी भ्राता रामकृष्ण द्विवेदी, आदि का नाम उल्लेखनीय है।

कलकत्ता—सेवा-केन्द्र द्वारा राखी के अवसर पर सार्वजनिक प्रवचनों एवं प्रदर्शनी का कार्यक्रम हुआ जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया। शहर के प्रमुख व्यक्तियों को राखी भी बाँधी गई जिसमें से कलकत्ता हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस, कृषि मंत्री, पी० डबल्यु० डी० मंत्री, उपकुलपति, पुलिस कमिश्नर, जेलर, आरविन्द आश्रम के सचिव आदि का नाम उल्लेखनीय है।

नेपाल (काठमण्डु)—सेवा-केन्द्र की ओर से इस अवसर पर विशिष्ठ व्यक्तियों को राखी का महत्त्व समझाते हुए राखी बाँधी गई जिनमें वहाँ के शिक्षामंत्री, विकास मंत्री, भूतपूर्व प्रधान मंत्री, राज्यसभा के स्थाई सदस्य, भूतपूर्व कमाण्डर-इन-चीफ, लण्डन, नोरवे और स्वेडेन के राजदूत आदि सम्मलित हैं। इसके अतिरिक्त महाराजधिराज, महारानी, युवराजधिराज आदि को राखी भेजी गई।

हैदराबाद सेवा-केन्द्र—द्वारा आन्ध्रप्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, सरकारी अधिकारी प्रमुख डाक्टरस, वकील, समाज सेवक आदि लगभग ३० लोगों को राखी बाँधी गई तथा बुराइयाँ छोड़कर दैवीगुण धारण करने की प्रेरणा दी। वहाँ के प्रमुख स्थान पर सार्वजनिक प्रवचनों का कार्यक्रम भी हुआ जिसका विस्तृत समाचार व लेख वहाँ के मुख्य समाचार पत्र 'हिन्दी मिलाप' में प्रकाशित हुआ इसके अतिरिक्त वहाँ के प्रमुख स्थानों पर स्थित राम-मन्दिर, जगन्नाथ मन्दिर, तुलजाभवन में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा तथा निकटवर्ती ग्रामों में ईश्वरीय सन्देश पहुँचाने हेतु प्रोजैक्टर शो, प्रदर्शनी व प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे संगारेड्डी, कुकुटपल्ली, कामारेड्डी, तुम्मलूर आदि का नाम उल्लेखनीय है। शहर के अनेक कॉलेजों एवं स्कूलों में भी प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ तथा ईश्वरीय साहित्य वहाँ की लायब्रेरी में रखवाया गया।

सिकन्दराबाद—सेवा-केन्द्र द्वारा आन्ध्रप्रदेश के मंत्री एन० भास्कर राव, बी० रामदेव, बैंकट राव, तथा विजय भास्कर रेड्डी, डी० आई० जी० पुलिस, प्रमुख व्यापारियों एवं सरकारी अधिकारियों को पवित्रता की सूचक राखी बाँधी तथा 'पवित्र और योगी' बनने का ईश्वरीय सन्देश दिया गया। वहाँ की स्थानीय जेल में भी लगभग ६०० कैदियों को इस पावन पर्व का महत्त्व बताया गया तथा उनसे बुराईयाँ छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई। समाचार पत्र के सम्पादकों तथा आकाश वाणी के डायरेक्टर को भी राखी बाँधी तथा ईश्वरीय सन्देश दिया।

जामनगर—सेवा-केन्द्र की ओर से सार्वजनिक प्रवचनों द्वारा इस पर्व का आध्यात्मिक रहस्य बताया गया तथा वहाँ के जेल में कैदियों को भी राखी बाँध कर बुराईयाँ छोड़कर दैवी गुण धारण करने की प्रेरणा दी। बस डिपो के मैनेजर, ड्राईवर, कण्डक्टर आदि को भी राखी बाँधी। ओखा, समाणा, माणवड, गुलाबनगर, नवागाम आदि स्थानों पर भी राखी का महोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

मुजफ्फर नगर—सेवा-केन्द्र की ओर से बिजनौर में 'कृषि एवं उद्योग प्रदर्शनी' में स्टाल लेकर एक मास के लिये चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसका उद्घाटन वहाँ के जिलाधीश ने किया। इस प्रदर्शनी को लगभग ५०००० लोगों ने देखा तथा परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया।

नागपुर—सेवा-केन्द्र की ओर से स्थानीय जेल में बहनों के प्रवचन हुए तथा कैदियों को राखी बाँधते हुए बुराईयाँ छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई। डिप्टी कलेक्टर, कलेक्टर, पुलिस कमिश्नर, जस्टिस, प्रमुख वकील, डाक्टरस आदि को भी पवित्रता की सूचक राखी बाँधी। शहर के मुख्य स्थान मोर भवन हॉल में सार्वजनिक प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिसका आकाशवाणी से प्रसारण हुआ तथा प्रमुख समाचार पत्रों में समाचार प्रकाशित हुआ।

शिमला—में राखी के पावन पर्व पर जन-जन को सार्वजनिक प्रवचनों द्वारा ईश्वरीय सन्देश दिया गया तथा हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल, मुख्य मंत्री, वहाँ के डिप्टी कमिश्नर, रेडियो डायरेक्टर, चीफ जस्टिस, पुलिस अधीक्षक, आई० जी० आदि को पवित्रता की सूचक राखी बाँधी। जन्माष्टमी के अवसर पर मन्दिरों में प्रवचन हुए तथा म्यूजियम में आकर्षक व शिक्षा प्रद झाँकियाँ लगाई गई।

मेरठ—जेल में कैदियों को ईश्वरीय सन्देश देते हुए बुराईयों को छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई गई। शहर के विशिष्ठ व्यक्तियों को भी पवित्रता की सूचक राखी बाँधी तथा समाचार पत्रों में भी लेख प्रकाशित हुए।

गोरेगांव—सेवा-केन्द्र द्वारा डाक्टरों, जजों, उद्योगपतियों व अन्य विशिष्ठ व्यक्तियों के लिये राजयोग शिविर का आयोजन किया जो बहुत सफल रहा। रक्षा बन्धन समारोह आध्यात्मिक प्रवचनों व गीतों के रूप में मनाया तथा शहर के विशिष्ठ

व्यक्तियों को पवित्रता की सूचक राखी बाँधी।

फरीदाबाद—सेवा-केन्द्र की ओर सार्वजनिक प्रवचनों द्वारा इस पावन पर्व का आध्यात्मिक रहस्य आम जनता को बताया तथा विशिष्ठ व्यक्तियों को राखी बाँधकर "पवित्र और योगी" बनने का ईश्वरीय सन्देश दिया तथा दस-सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत उनसे कोई न कोई बुराई छोड़ने का फार्म भरवाया। समाचार पत्रों ने भी इस सेवा में अच्छा ही सहयोग दिया।

उज्जैन—सेवा-केन्द्र द्वारा भैरुगढ़ सैन्ट्रल जेल तथा कुष्ठ धाम में कैदियों तथा रोगियों की सेवा की गई और उन्हें स्नेह की सूचक राखी बाँधी तथा दस-सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत उनसे बुराईयाँ छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई। समाचार पत्रों में इसका समाचार प्रकाशित हुआ।

पुरी— सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ के कलेक्टर, एस० पी०, धार्मिक संस्थाओं के प्रमुख अधिकारी व महन्त आदि को ईश्वरीय सन्देश दिया तथा राखी बाँधी। वहाँ के प्रमुख स्थानों पर आध्यात्मिक प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ। सेवा-केन्द्र का तृतीय वार्षिकोत्सव भी बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

मोरीशस में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—मोरीशस से ब्रह्माकुमारी चन्द्रा एवं सोमप्रभा जी लिखती हैं कि दादी निर्मलशान्ता जी तथा पार्टी के द्वारा की गई सेवा के परिणाम स्वरूप जन-जन के अन्दर आध्यात्मिक जागृति की लहर पैदा हुई है तथा वहाँ के विशिष्ठ लोग तथा समाचार पत्रों, रेडियो, टी० वी द्वारा आम-जनता तक ईश्वरीय सन्देश पहुँचाने में बहुत मदद मिली है। वहाँ के गवर्नर-जनरल व प्रधान मंत्रीं बहनों द्वारा की गई सेवाओं से बहुत ही प्रभावित हुए हैं और अपने सचिव को सेवा-केन्द्र पर भेजकर बहनों से राखी बंधवाने को बुलाया। कई धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं ने स्वयं ही बहनों को प्रवचनों का निमन्त्रण दिया। डिवाईन लाईफ सोसाइटी द्वारा आयोजित सम्मेलन में जीवन और उसका लक्ष्य पर ब्र० कु० सोमप्रभा का प्रवचन हुआ जिसमें वहाँ के प्रधान मंत्री भी पधारे थे जिसके कारण टी० वी० में भी सारा कार्यक्रम दिखाया गया। दूसरा प्रवचन "योग एवं कर्मों की गति" पर ब्र० कु० चन्द्रा का हुआ जिससे अनेक धार्मिक व सामाजिक नेताओं को परमात्मा शिव का असली परिचय दिया गया। इसके अतिरिक्त "विद्या कल्याण भवन में" बहनों के प्रवचनों और फिल्म शो का आयोजन हुआ जिसमें आध्यात्मिक जाग्रति विषय पर ब्र० कु० चन्द्रा तथा "रक्षाबंधन का महत्त्व" पर ब्र० कु० सोम प्रभा के प्रवचन हुए। इसके अतिरिक्त सेवा-केन्द्र पर भी राखी बंधन का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया गया तथा वहाँ के उद्योग मंत्री, शिक्षा मंत्री, प्रधान मंत्री, विश्व-विद्यालय के उपकुलपति व अन्य विशिष्ठ व्यक्तियों को राखी बाँधी तथा ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

केनबरा (आस्ट्रेलिया)—से समाचार मिला है कि जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु वहाँ पर विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सर्व प्रथम वहाँ के प्रमुख स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया साथ ही रेडियो पर ब्र० कु० निर्मला जी का महिला कार्यक्रम में इन्टरव्यू प्रसारित हुआ। 'अन्तर्राष्ट्रीय अपंग वर्ष' के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रम में भी बहनों के प्रवचन हुए। स्कूल के विद्यार्थियों के लिये एक निबन्ध प्रतियोगिता' का आयोजन भी किया गया जिसमें अनेक विद्यार्थियों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त वहाँ की आध्यात्मिक व सामाजिक संस्थाओं में भी बहनों के प्रवचन हुए जिसमें से प्रमुख चर्च, मन्दिर, व नैचरल हैल्थ सोसाइटी का नाम उल्लेखनीय है। वहाँ के मैम्बर पार्लियामैन्ट, सरकारी अधिकारियों व विशिष्ठ व्यक्तियों को भी ईश्वरीय सन्देश दिया।

ट्रिनिडाड—से ब्रह्माकुमारी हेमलता तथा कृष्णा जी लिखती हैं कि वहाँ की पब्लिक लायब्रेरी, टाऊन

हाल में मेयर की अध्यक्षता में आध्यात्मिक प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे काफी लोगों ने लाभ उठाया। इसी प्रकार साऊथ ट्रिनिडाड में स्थित फिलिपाईन के रामायण यज्ञ में तथा मध्य ट्रिनिडाड के कोवा मन्दिर में आयोजित रामायण यज्ञ में ब्रह्मा-कुमारी बहनों के प्रवचन हुए। वहाँ की अनेक चर्चो में तथा प्रमुख स्थानों पर भी आयोजित कार्यक्रम बहुत ही सफल रहें।

पेरिस— में स्थित सेवा-केन्द्र द्वारा वहाँ की जनता को ईश्वरीय सन्देश देने के लिये आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन किया गया तथा वहाँ पर स्थित भारतीय राजदूत को भी सम्मुख मिल कर ईश्वरीय सन्देश दिया गया। दादी निर्मल शान्ता एण्ड पार्टी के पेरिस में पहुँचने पर भी अच्छी सेवा करने का अवसर मिला जिसके परिणाम स्वरूप सात नई आत्माओं ने साप्ताहिक कोर्स किया तथा नियमित रूप से क्लास में आ रहे हैं।

गयाना—से ब्रह्माकुमारी मोहिनी एवं मीरा जी लिखती हैं कि ग्याना के प्रमुख स्थानों पर 'राजयोग प्रदर्शनी तथा शिविर का आयोजन किया तथा राजयोग फिल्म द्वारा अनेकानेक आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। दस-सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत भी सभी वर्गों के लोगों की अच्छी ही सेवा की गई तथा इसकी कुछ पेंटिंग वहाँ पर मुख्य स्थानों पर लगाई गई। रक्षा-बंधन का पावन पर्व भी वहाँ बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

केन्या (नेरोबी)— में स्थित सेवा-केन्द्र से ब्रह्माकुमारी वेदान्ती जी लिखती हैं कि दादी निर्मल शान्ती जी तथा रमेश भाई व पुष्पा बहन के वहाँ पहुँचने पर विशिष्ठ व्यक्तियों तथा समाचार पत्रों की अच्छी ही सेवा की गई। एक प्रैस सम्मेलन में लगभग दस अखबारों के प्रतिनिधि आये थे जो बहुत ही प्रभावित हुए तथा उन्होंने अपने समाचार पत्रों में संस्था का परिचय और इस द्वारा की जा रही ईश्वरीय सेवाओं का समाचार प्रकाशित किया। केन्या के राष्ट्रपति को भी सम्मुख मिल ईश्वरीय सन्देश दिया गया तथा मुख्यालय माऊँट आबू में आने का निमन्त्रण दिया। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्थानों पर आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम बड़े ही सफल रहे।

लण्डन—में स्थित सेवा-केन्द्र से ब्रह्माकुमारी जयन्ती जी व सुदेश जी लिखती हैं कि लण्डन की जनता में आध्यात्मिक जाग्रति लाने के लिये विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत बैमले, लीड्स, होनस्लो और लैस्टर में नवीन सेवा-केन्द्रों का उद्घाटन दादी निर्मल शान्ता जी के कर-कमलों से बड़े उत्साह पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। लण्डन के ब्रैन्ट टाऊन हाल तथा चैलसी ओल्ड टाऊन हाल में आयोजित कार्य-क्रम में ब्रह्माकुमारी निर्मलशान्ताजी का गीता' पर प्रवचन सुनने के लिये बहुत संख्या में लोग पधारे थे जिसमें भारतीय राजदूत भी पधारे थे। इसका समाचार वहाँ के प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ जिसमें से 'नेशनल डेली' का नाम उल्लेखनीय हैं। 'न्यू एज सेमिनार' का आयोजन भी बहुत सफल रहा "माईण्ड एण्ड बोडी फैस्टिवल" में जिसे लगभग ७०,००० लोगों ने देखा, जयन्ती बहन को प्रवचन करने के लिये आमन्त्रित किया गया। इसका समाचार भी वहाँ के सभी प्रमुख समाचार पत्रों में छपा तथा रेडियो द्वारा प्रसारित किया गया।

इसी प्रकार अमृतसर, जालन्धर, पटियाला, फिरोजपुर, जींद, मोगा, जगाधरी, सहारनपुर, गाजियाबाद, हापुड़, रोपड़, सिकन्दराबाद, रुड़की, सिरसा, हांसी, हिसार, भिवानी, करनाल, सोनीपत, पानीपत, ककोड़, मुज्जफरनगर, आर्वी, भण्डारा, भरुच, हुबली, धारवाड़, बीदर, ऊना, तलवाड़ा, डबवाली, अलवर, जयपुर, कोटा, झाँसी, जेतपुर, बेलगांव, होशियारपुर, सोलन, नवांशहर, फतेहपुर, फरुखाबाद, जोधपुर, भटिण्डा कोलार गोल्ड फिल्ड, दोदुबलापुर, गोरीबिदनुर, नेकमंगला,

गोवा, ढेन्कानाल, आदिपुर, ब्रह्मपुर, अमरेली, सिरोही, फतेहाबाद, मैनपुरी, तिरुपति, गोरखपुर, हिम्मतनगर, विजयनगर, बुरहानपुर, पठानकोट, सतारा, अंजार, बडीपदा, पुरी कासगंज, पाली, मुजफ्फरपुर, भुवनेश्वर, भीलवाड़ा, मण्डी, सोलापुर, चितौड़गढ, डेराबसी, फतेहपुर, गुमला आदि सेवा-केन्द्रों द्वारा भी राखी का पावन पर्व बड़ी ही धूमधाम से मनाया तथा अनेकानेक आत्माओं को पवित्र और योगी बनने का ईश्वरीय सन्देश दिया गया तथा दस-सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत बुराईयाँ छोड़कर दैवीगुण धारण करने की प्रेरणा दी तथा प्रतिज्ञा पत्र भरवाये। ●

माया मेरा क्या कर लेगी ?

ब्र० कु० राजकुमारी नागपाल, शालीमार बाग, दिल्ली

काँटा जिसके संग न हो,
ऐसा कोई फूल नहीं।
बीच भँवर न लिए जो
ऐसा तो कोई कूल नहीं ॥
तपेगा सोना—
तभी तो खोट निकलेगी।
माया मेरा क्या कर लेगी ?
भगवान मिला है कोई कम बात है क्या ?
जीना सीखा है पाकर संगीत नया।
स्वाँस-स्वाँस जन सेवा में—
मेरी बड़ी उमँग नवेली।
माया मेरा क्या कर लेगी ?
मैं अविनाशी, मीत अविनाशी,
छुटपुट संकल्पों से न घबराती,
चैलेन्ज है जग को—
तलवार की धार मेरी सहेली।
माया मेरा क्या कर लेगी ?
कितने आए बाघ लुटेरे,
हिलाने लगे मेरे बसेरे,
पर इक हाथ, इक साथ, इक विश्वास—
तो फिर नहीं डगमग नाव चलेगी।
माया मेरा क्या कर लेगी ?
जितना बड़ा हो महारथी,
उतनी ही यह उसे पे चढ़ी,
तैयार किए हैं अलंकार—
अब तो आत्मा उनसे सजेगी।
माया मेरा क्या कर लेगी ?
बाबा ने तो कहा माया उसकी बेटी,
अंत तक आएगी नहीं हटेगी,
श्रीमत की लाठी ले, आत्मस्थिति का प्रकाश;
ईश्वरीय यादों के सहारे, अथकता, का ह्रास;
तो फिर बेपरवाह, बेशक संग चलेगी।
अरे ! माया मेरा क्या कर लेगी ?
कल्प पहले भी था इसे जीता।
न कर पाई थी मुझे रीता ॥
अरे ! पेपर से क्या घबराना !
इससे तो नई डिग्री मिलेगी।
माया मेरा क्या कर लेगी ?

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक एवं प्रकाशक, 151 ई, कमला नगर, दिल्ली ने गगन प्रिण्टर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-51 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (D) 178

समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में लेख और समाचार

पिछले लगभग दो महीन में १७५ पत्रों तथा पत्रिकाओं में ईश्यरीय विश्व-विद्यालय के लेख, समाचार, संवाद आदि छपे हैं। उनमें से कुछेक निम्नलिखित हैं और कुछ ज्ञानामृत के इसी अंक के भाग-२ में पृष्ठ २५ पर दिए गए हैं :—

१. मेरठ से छपा साप्ताहिक, पूर्व-पश्चिम-एरिया, साप्ताहिक पी० सी० टाइम्स में धूम्रपान तथा रक्षाबन्धन से सम्बन्धित लेख प्रकाशित हुए।

२. जूनागढ़ से साप्ताहिक शाआत, जयहिन्द, फूल छाब, लोक दूत तथा केसरी में रक्षाबन्धन तथा बलात्कार का सही इलाज आदि विषयों पर लेख प्रकाशित हुए।

३. सहारनपुर से ख़बरदार, वीर व्रत, स्वर्णिम प्रकाश, निराली दुनिया, यात्रा साप्ताहिक तथा सप्ताहिक दरवेश में १०-सूत्री कार्यक्रम, धूम्रपान या विषपान, रक्षाबन्धन, बलात्कार के अपराध का सही इलाज तथा पीना बुरा शराब का विषयों पर लेख प्रकाशित हुए।

४. श्री गंगानगर से दैनिक सीमावर्ती, गगानगर पत्रिका, प्रताप केसरी में अपराध उन्मूलन संगोष्ठी, रक्षा-बन्धन तथा स्वधर्म द्वारा आसुरी वृतियों का उन्मूलन विषयों पर लेख प्रकाशित हुए।

५. राँची से राँची एक्सप्रेस तथा दि सेन्टीनल में रक्षा-बन्धन तथा मद्यपान विषयों पर लेख प्रकाशित हुए।

६. जबलपुर से युगधर्म में रक्षाबन्धन से सम्बन्धित लेख प्रकाशित हुआ।

७. ऊना से बीरहाक में आध्यात्मिक ढंग से अपराधियों में सुधार तथा रक्षाबन्धन के लेख प्रकाशित हुए।

८. फरीदाबाद से शेरे हरियाणा तथा प्राण में रक्षा-बन्धन से सम्बन्धित लेख छपे।

९. अकोला से मातृ-भूमि में रक्षाबन्धन से सम्बधित लेख प्रकाशित हुआ।

१०. फिरोजाबाद से आज की आवाज तथा युग परि-वर्तन समाचार पत्रों में रक्षाबन्धन से सम्बन्धित लेख प्रकाशित हुए।

११. फरूखाबाद से पंचरत्न में विकलांगों की सेवा तथा रक्षाबन्धन से सम्बन्धित लेख छपे।

१२. नीमच से नई विद्या समाचार पत्र में भी मद्यपान तथा अनैतिकता विषय पर लेख प्रकाशित हुआ।

१३. गाजियाबाद से युग करवट समाचार पत्र में रक्षा-बन्धन तथा बलात्कार के अपराध का सही इलाज नामक लेख प्रकाशित हुए।

१४. चन्द्रपुर से मजदूर टाइम्स, साप्ताहिक प्रतिज्ञा में मद्यपान तथा रक्षबन्धन से सम्बन्धित लेख प्रकाशित हुए।

१५ कटनी से महाकौशल केसरी, दैनिक मध्यप्रदेश में रक्षाबन्धन पर लेख प्रकाशित हुए।

१६. वाराणसी से गांडीव तथा जयदेश में कैदियों को राखी बाँधी गई समाचार प्रकाशित हुआ।

१७. राजपुर से देश दी आवाज में १०-सूत्री कार्यक्रम का लेख प्रकाशित हुआ।

१८. रुड़की से दि सदाचार टाइम्स में रक्षाबन्धन तथा बलात्कार का सही इलाज नामक लेख प्रकाशित हुए।

१९. मैनपुरी से जय क्षात्र धर्म में जन्माष्टमी से सम्बन्धित लेख प्रकाशित हुआ।

२०. भिवानी से मस्त बादल में भ्रष्टाचार भस्मकारी यज्ञ तथा रक्षा बन्धन विषयों पर लेख प्रकाशित हुए।

२१. भरतपुर से मशहूर में रक्षाबन्धन का लेख प्रका-शित हुआ।

२२. बस्ती से जगबीर में धूम्रपान या विषपान नामक लेख प्रकाशित हुआ।

२३. बल्लारपुर से बल्लापुर टाइम्स में रक्षाबन्धन का लेख प्रकाशित हुआ।

२४. भरुच से उपवन साप्ताहिक में रक्षाबन्धन तथा १०-सूत्री कार्यक्रम से सम्बन्धित लेख प्रकाशित हुए।

२५. भुज से कच्छ मित्र में रक्षाबन्धन का लेख प्रकाशित हुआ।

२६. धुलिया से आपला महाराष्ट्र में दस-सूत्री कार्य-क्रम प्रकाशित हुआ।

२७. सोलापुर से विश्व समाचार में महायज्ञ से सम्बन्धित लेख तथा भेंट वार्ता प्रकाशित हुई।

२८. नांदुरा से शिरजोर में भ्रष्टाचार भष्मकारी महायज्ञ का लेख प्रकाशित हुआ।

२९. बुरहानपुर से वीर संतरी में रक्षाबन्धन का लेख प्रकाशित हुआ।

३० बटाला से साफ रास्ता साप्ताहिक में १०-सूत्री कार्यक्रम का समाचार प्रकाशित हुआ।

३१. डीसा से ग्राम्य क्रान्ति में रक्षाबन्धन का लेख प्रकाशित हुआ।

३२. सिरसी से सहचार्य साप्ताहिक तथा सिरसी समाचार में संस्था का परिचय छपा।

३३. गडग से नवउदय में संस्था का परिचय प्रकाशित हुआ।

३४. एटा से विचसार मंच में रक्षाबन्धन का लेख प्रकाशित हुआ।

इसके अतिरिक्त, कुछेक समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं, जिनमें पिछले दो मास में लेख, समाचार तथा सन्देश छपे, के नाम ज्ञानामृत के सितम्बर-अक्टूबर-I में छपे हैं। मालूम रहे कि १०-सूत्री कार्यक्रम आदि से सम्बन्धित अब तक कुल ६०२ पत्रों-पत्रिकाओं में लेख तथा समाचार प्रकाशित हुए हैं। आध्यात्मिक मेलों, सम्मेलनों, प्रदर्शनियों आदि से सम्बन्धित समाचार भी भारत के मुख्य समाचार पत्रों में छपे हैं। वे इन ६०२ पत्रों-पत्रिकाओं से अलग हैं। उनको तथा परिशिष्ठ (Supplement) को मिलाकर कुल संख्या १००० हो जायेगी—ऐसा अनुमान है।

एम० के० वर्मा, ज़िलाधीश जयपुर को ब्रह्माकुमारी पूनम स्नेह और पवित्रता की सूचक राखी बाँध रही हैं।

कर्नाटक के सहकारी मंत्री जी को ब्रह्माकुमारी कला राखी बाँधने के पश्चात् तिलक दे रही हैं। ब्र० कु० सरोज और रामचंद्र भाई साथ में हैं।

लीड्ज़ (इंग्लैण्ड) विश्व विद्यालय में अर्थशास्त्र के प्रोफ़ैसर भ्राता लैसर को ब्र० कु० सुदेश राखी बाँधने के पश्चात् आत्मस्मृति का तिलक लगा रही हैं।

कोल्हापुर के महापौर भ्राता कणेरकर को राखी बाँधने के पश्चात् ब्र० कु० सुनन्दा, भारती तथा अन्य भाई ईश्वरीय स्मृति में खड़े हैं।

लीड्ज़ (इंग्लैण्ड) सेवा-केन्द्र पर ब्र० कु० सुदेश लीड्ज़ के महापौर को स्नेह और पवित्रता की सूचक राखी बाँध रही हैं। साथ में उनकी युगल देख रही हैं।